सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥

सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुखों को दूर करने वाली, हे देवि महालक्ष्मी! तुम्हें नमस्कार है।

A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 31 अक्टूबर, 2024

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-63 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

अयोध्या में भव्य दीपोत्सव

अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, हमारी संस्कृति, सामाजिकता और सौहार्द को वैश्विक स्तर पर दर्शाते रामजन्म भूमि अयोध्या में जगमग होते 28 लाख दीप।

इस दिवाली सतर्कता का दिया जलाएं !

विशेष संपादकीय

अजय बोकिल

ये दिवाली पहले की दिवालियों की तुलना में इस मायने में अलग है, क्योंकि पूर्व में दिवाली पर लक्ष्मी के आने का आह्वान किया जाता था। ताकि घर परिवार में सुख समृद्धि रहे। लेकिन बदलते वक्त में घर की लक्ष्मी को सुरक्षित रखने की नई चुनौती हम सब के सामने है। लक्ष्मी धन की देवी है और स्वभाव से चंचला है। जैसे आती है, वैसे ही चली भी जाती है। लक्ष्मी आए, यह तो सभी चाहते हैं, लेकिन वह घर से चली जाए और वो भी डिजीटल ठगी की वजह से तो यह दुर्भाग्य और जागरूकता की कमी ही है।

अभी तक हम भारतीयों को लोग लक्ष्मी को कैसे प्रसन्न करें, इसके टिप्स मिला करते थे। घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो, हर भौतिक सुख आपके चरणों में हो, यह कौन नहीं चाहता। लोग इसके लिए क्या-क्या नहीं करते। अधिकांश लोग अपने घर को लक्ष्मी का स्थायी निवास बनाने के लिए मेहनत की पराकाष्ठा करते हैं। शायद इसी से प्रसन्न होकर लक्ष्मी कई रूपों में हमारे साथ होती है। कभी अचल सम्पत्ति के रूप में तो कभी चल सम्पत्ति के रूप में। स्वर्णाभूषण के रूप में तो आजकल स्टॉक या नकदी रूप में। वह बरसों की कमाई के बाद वह समुचित बैंक बैलेंस के रूप में भी हो सकती है। अभी तक यह माना जाता रहा है कि परिश्रम के राजमार्ग से आई लक्ष्मी कभी अपना आशियाना छोड़कर नहीं जाती। लेकिन अब समय बदल गया है। यह मान्यता न केवल पुरानी पड़ चुकी है बल्कि उसके संदर्भ भी बदल गए हैं। साइबर ठगी और डिजीटल अरेस्ट के रूप में समाज के शत्रुओं ने आपकी लक्ष्मी को अपने पाले में खींचने का नाजायज तंत्र विकसित कर लिया है और वो इसे सफलता से अंजाम दे रहे हैं। लिहाजा यह मन मानिए कि बैंकों में रखा आपका पैसा पूरी तरह सुरक्षित और अलक्षित है। ऑन लाइन ठगी करने वाले सात तालों में छुपे राज भी पता कर लेते हैं, जिसमें आपका निजी डाटा और बैंक बैलेंस तक शामिल है। वो आपको अपनी दबंगई से बातों में फंसा कर आपकी ही लक्ष्मी को फर्जी खातों में ट्रांसफर करवा के आपको एक झटके में कंगाल बना सकते हैं। लक्ष्मी को न चाहते हुए भी आपका घर छोड़ना पड़ता है। लक्ष्मी को गंवाकर आप अलक्ष्मी के दास बन सकते हैं, जिसका स्वभाव ही दारिद्रय है।

डिजीटल ठगी की यह प्रवृत्ति सन्मार्ग से आई लक्ष्मी के वास में रोड़ा बन रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी इस बार 'मन की बात' में इस नई ठगी का जिक्र करते हुए तीन सुरक्षा और एहतियाती सूत्र दिए। ये हैं रूको, सोचो और एक्शन लो। आशय यही था कि सतर्क और सजग रहेंगे तो अपनी लक्ष्मी को बचाने में कामयाब होंगे।

ध्यान रहे कि लक्ष्मी ही इस चराचर जगत के आर्थिक व्यवहारों की रीढ़ है, धन की देवी है, लेकिन वह ठहरती वहीं है, जो समाज सचेत, परिश्रमी और जागरूक रहता है। इस दिवाली इसी सतर्कता का दिया जलाएं और घर की लक्ष्मी को किसी डिजीटल ठग के शिकंजे में न जाने दें। लक्ष्मी की सुरक्षा भी देश की सुरक्षा है। अपनी समृद्धि की संरक्षा है।

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस का राज्योत्सव शुरू

म.प्र. अपनी गौरवशाली परंपराओं को सहेजते हुए विकास और प्रगति के पथ पर अग्रसर : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश अपनी गौरवशाली परंपराओं को सहेजते हुए विकास और प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है। राज्य शासन द्वारा दशहरे पर शस्त्र-पूजन और दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा का आयोजन इस बात का प्रतीक है। प्रदेश की स्थापना दिवस पर परम्परागत मलखंब कला का प्रदर्शन भी इस भाव का प्रकटीकरण है। अतीत को सहेज कर समय के साथ चलने की यह विशेषता प्रदेश को विश्व में वैशिष्ट्य प्रदान करती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए मध्यप्रदेश सदैव तत्पर है। यह प्रदेश के लिए गर्व और सौभाग्य का विषय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा धन्वंतरि जयंती पर देश को दी गई सौगातों में सर्वाधिक मध्यप्रदेश को प्राप्त हुई हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के कर-कमलों से 3 शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय क्रमशः मंदसौर, नीमच और सिवनी का लोकार्पण हुआ है।

दीपावली की शुभकामनाएं

प्रकाश पर्व दीपावली के अवसर पर 'सुबह सवेरे' कार्यालय में दि. 31 अक्टूबर व 1 नवंबर को अवकाश रहेगा। अखबार का अगला अंक दि. 3 नवंबर 2024 को प्रकाशित होगा। 'सुबह सवेरे' के सभी पाठकों को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं। सं.

धार जिले एवं संपूर्ण मध्यप्रदेश के सम्मानित नागरिकों को दीपावली के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

कृष्णकांत पाटीदार,
प्रदेश अध्यक्ष

सौजन्य- कृष्णकांत पाटीदार, प्रदेश अध्यक्ष, मध्यप्रदेश पाटीदार समाज, तिरला, धार (मध्यप्रदेश)

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 31 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

महालक्ष्मी योग में आज मनेगी दीवाली, भव्य तैयारी

पूजा के 6 मुहूर्त,शाम को समृद्धि देने वाले बन रहे 4 राजयोग

वाराणसी (एजेंसी)। 31 अक्टूबर को अमावस्या शाम 4 बजे के बाद शुरू होगी और 1 नवंबर को शाम तक रहेगी। इस कारण देश में ज्यादातर जगह 31 अक्टूबर को दीपावली मनेगी। इस दिन कई ऐसे योग भी बन रहे हैं, जो लक्ष्मी पूजन से लेकर नए कामों की शुरुआत के लिए शुभ रहेंगे। पंडितों का मानना है कि दीपावली पर शाम को समृद्धि देने वाले 4 राजयोग बनेंगे। शश, कुलदीपक, शंख और लक्ष्मी योग बनने से इस महापर्व का शुभ फल और बढ़ जाएगा। देश के प्रमुख ज्योतिषियों और पंचांगकारों की आज सभा हुई थी। इसमें भारतीय पंचांग और धर्मशास्त्र के मानक ग्रंथों पर मंथन कर तय किया गया कि 31 अक्टूबर को ही दीपावली और लक्ष्मी पूजन शास्त्रसम्मत है। ज्योतिषाचार्यों में बताया है कि कि अमावस्या तिथि 31 अक्टूबर दोपहर 3.30 बजे से चार बजे के बीच हो रहा है। अमवास्या तिथि पर प्रदोष काल में ही लक्ष्मी पूजन किया जाता है। इसके साथ निशीथ काल यानी मध्य रात्रि में काली पूजन किया जाता है। ये सभी काम 31 अक्टूबर को करना ही शास्त्र सम्मत है। वहीं, 1 नवंबर को भी प्रदोष काल तक अमावस्या तिथि रहेगी, लेकिन सूर्यास्त के बाद जितने समय तक अमावस्या रहनी चाहिए, वह नहीं है। ऐसे में एक नवंबर को दीपावली मनाना शास्त्रसम्मत नहीं है। दीपावली की कार्तिक अमावस्या की रात साधनाएं जल्दी फलित करने वाली मानी जाती है। इसका कारण है कि इस रात दैवीय और आसुरी दोनों शक्तियां सजीव होती हैं।

संक्षिप्त समाचार

सावधान! साइबर अपराधियों के निशाने पर भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश पर साइबर हमलों के लगातार बढ़ते खतरे को लेकर विशेषज्ञों ने गंभीर चिंता व्यक्त की है। मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट में आगाह किया गया कि अगर इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो 2033 तक भारत पर एक ट्रिलियन साइबर हमले हो सकते हैं। इसके अलावा, 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूरे होने तक यह संख्या 17 ट्रिलियन तक पहुंच सकती है।

रिपोर्ट के मुताबिक, गैर-लाभकारी संस्था प्रहार द्वारा जारी की गई रिपोर्ट 'द इनविजिबल हैंड' में साइबर चुनौतियों का जिक्र किया गया है। रिपोर्ट में देश के महत्वपूर्ण ढांचे पर होने वाले हमलों और नागरिकों के दुरुपयोग की संभावनाओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

नवाब मलिक से दोस्ताना, सना मलिक को भी टिकट

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र चुनाव में गठबंधन के बीच भी पैंतरेबाजी जमकर हुई। महायुति में सीटों को लेकर विवाद तो सामने नहीं आया, मगर बीजेपी की मनमर्जी को भी अजित पवार ने खत्म कर दिया। उन्होंने आखिरी क्षण में ऐसा दांव खेला कि बीजेपी की हालत न उगलने वाली और न ही निगलने

वाली हो गई। बीजेपी ने एनसीपी नेता नवाब मलिक की उम्मीदवारी का विरोध किया था। करीब महीने भर चले सीट बंटवारे के दौरान अजित पवार इस मुद्दे पर खामोश बने रहे, फिर नवाब मलिक की बेटी सना मलिक को टिकट दे दिया। मगर नामांकन के अंतिम दिन मानखुर्द शिवाजी नगर सीट से नवाब मलिक को उम्मीदवार बनाकर बीजेपी को मुश्किल में डाल दिया।

ब्रिटेन से 102 टन सोना वापस लाया आरबीआई

- अभी भी करीब 324 टन सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड में

नई दिल्ली (एजेंसी)। धनतेरस पर, भारतीय रिजर्व बैंक ने बताया कि उसने लंदन में बैंक ऑफ इंग्लैंड के वॉल्ट से 102 टन सोना देश के भीतर सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया है। विदेशी मुद्रा भंडार के प्रबंधन पर नई रिपोर्ट से पता चला है कि सितंबर के अंत में,

आरबीआई के पास मौजूद 855 टन सोने में से 510.5 टन देश में सुरक्षित स्थान पर रखा गया है। सितंबर 2022 के बाद से, 214 टन सोना देश में लाया जा चुका है। सरकार दुनियाभर में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच सोने को सुरक्षित रखना चाहती है। सरकार में कई लोग मानते हैं कि घर में सोना रखना ज्यादा सेफ है। इससे पहले 31 मई को, एक रिपोर्ट में कहा गया था कि यूके से 100 टन सोना भारत लाया गया है।

दीवाली से पहले एलएसी पर 'जश्न' का है माहौल

- भारत-चीन बॉर्डर पर सैनिकों के हटने का प्रोसेस पूरा
- आज दीवाली पर एक-दूसरे को मिठाई खिलाएंगे सैनिक
- पेट्रोलिंग पर भी जल्द ग्राउंड कमांडर्स की होगी बातचीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-चीन बॉर्डर पर डेपसांग और डेमचोक में दोनों सैनिकों के पीछे हटने की प्रक्रिया बुधवार को पूरी हो गई। गुरुवार को दीवाली पर चीन और भारत के सैनिक एक-दूसरे को मिठाई खिलाएंगे। पेट्रोलिंग को लेकर जल्द ही ग्राउंड कमांडर के अधिकारियों के बीच बातचीत होगी। ग्राउंड कमांडर में ब्रिगेडियर और उससे नीचे के रैंक के अधिकारी होते हैं। भारत-चीन के बीच एलएसी पर पेट्रोलिंग को लेकर हुए समझौते पर विदेश मंत्री एस जयशंकर ने 27 अक्टूबर को कहा था कि सैनिकों की वापसी पहला कदम है। अगला कदम तनाव कम करना है। ये तनाव तभी कम होगा, जब भारत को यकीन हो जाए कि चीन भी ऐसा ही चाह रहा है। तनाव कम करने के बाद, बॉर्डर को कैसे मैनेज किया जाए, इस पर चर्चा की जाएगी। भारत-चीन के बीच पूर्वी लद्दाख में चार साल से सीमा विवाद को लेकर तनाव था। दो साल की लंबी बातचीत के बाद पिछले दिनों एक समझौता हुआ है। दोनों सेनाएं विवादित पॉइंट्स देपसांग और डेमचोक से पीछे हटेंगी। 18 अक्टूबर को देपसांग और डेमचोक से पीछे हटने की जानकारी सामने आई थी। इसमें बताया गया था कि यहां से दोनों सेनाएं अप्रैल 2020 से पहली की स्थिति में वापस लौटेंगी। साथ ही उन्हीं क्षेत्रों में गश्त करेंगी, जहां पहले किया करती थीं।

सलमान को फिर मिली जान से मारने की धमकी

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्टर सलमान खान को एक बार फिर से जान से मारने की धमकी मिली है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस बार धमकी देने वाले ने 2 करोड़ रुपए की फिरौती मांगी है। मुंबई ट्रैफिक पुलिस को मिली इस धमकी में कहा गया है कि पैसे न देने पर अभिनेता की जान ले ली जाएगी। मैसेज मिलने के बाद वर्ली में मौजूद अधिकारियों ने मैसेज भेजने वाले अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। 25 अक्टूबर को भी मिली थी धमकी 5 दिन पहले भी सलमान को इसी तरीके से जान से मारने की धमकी दी गई थी। आरोपी को मंगलवार को मुंबई पुलिस ने नोएडा से गिरफ्तार किया। इसकी पहचान मोहम्मद तैयब (20) के रूप में हुई है। एसपी नोएडा प्रवीण कुमार सिंह ने बताया- आरोपी को सूरजपुर कोर्ट में पेश किया जाएगा। वहां से मुंबई पुलिस ट्रांजिट रिमांड पर लेकर जाएगी।

बारामती में शरद पवार ने खेल दिया इमोशनल कार्ड

- बोले-सुप्रिया सुले को कोई पद नहीं दिया,अजित को 4 बार डिप्टी सीएम बनाया

पुणे (एजेंसी)। एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने अपने पोते युगेंद्र के लिए मंगलवार को रैली आयोजित की। इस रैली उन्होंने अजित (अजित पवार) वही थे जिन्होंने लोकसभा चुनाव के दौरान अपने भाषणों में कहा था कि शरद पवार भावनात्मक कार्ड खेलेंगे और आंखों में

पवार के भावनात्मक भाषण की नकल की। परिवार और सुप्रिया सुले का जिक्र करते हुए रुमाल से उन्होंने आंखें पोंछी और कहा, वह आंसू भरकर मतदाताओं से अपील करेंगे।

अब, आपने उनका (अजित का) भाषण (सोमवार को) देखा होगा। मैं कोई भावनात्मक अपील नहीं करूंगा, बल्कि तथ्यों के आधार पर बोलूंगा। एनसीपी (सपा) प्रमुख की यह टिप्पणी अजित पवार के उस बयान के एक दिन बाद आई है जिसमें उन्होंने कहा था कि उनकी मां आशाताई ने दूसरे गुट को बारामती में उम्मीदवार न उतारने की सलाह दी थी। सोमवार को नामांकन दाखिल करने के बाद उन्होंने कहा था, मेरे खिलाफ उम्मीदवार उतारने का फैसला किसने लिया। कहा जाता है कि यह पवार साहब का फैसला था।

महाराष्ट्र में भाजपा ने 12 सीटों पर कर दिया 'खेला'

बीजेपी के खेल की चुनाव बाद के समीकरण पर होने लगी चर्चा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में उलझने बेशुमार हैं। कभी राज्य में 4 दल हुआ करते थे, अब उनमें से ही दो में ऐसी टूट हुई है कि 6 पार्टियां बन चुकी हैं। यही नहीं इसके चलते चुनाव के बाद भी जटिल स्थिति पैदा हो सकती है। इसकी वजह यह है कि 6 दलों में से किसी एक को भी पूर्ण बहुमत मिलने के आसार कम ही हैं। ऐसे में गठबंधन सरकार ही बनेगी और चुनाव बाद स्थिति रोचक हो सकती है। खासतौर पर सीएम फेस को लेकर जो जद्दोजहद मचेगी, उसमें सीटों की संख्या मायने रखेगी। इस लिहाज से भाजपा शायद पहले से ही सतर्क है और उसने एक ऐसा दांव चल दिया है, जिसकी अभी से चर्चा होने लगी है। भाजपा ने कुल 148 सीटों पर उम्मीदवार उतारे हैं, जबकि अपने 12 नेताओं को एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी से टिकट दिला दिया है। दरअसल भाजपा के रणनीतिकारों का कहना था कि वे हर हाल में 160 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे। इसे लेकर महायुति में लंबी खींचतान हुई और अंत में जो समझौता हुआ, वह सबको हैरान करने वाला है। भाजपा के 8 नेताओं को एकनाथ शिंदे की शिवसेना से टिकट मिल गया है और 4 पर अजित पवार की एनसीपी से मिला है।

बेंगलुरु में चार दिन रुके ब्रिटेन के राजा चार्ल्स

बेंगलुरु (एजेंसी)। ब्रिटेन के राजा चार्ल्स और उनकी पत्नी क्वीन कैमिला ने हाल ही में बेंगलुरु का दौरा किया। वे लगभग चार दिन तक दक्षिण भारतीय राज्य कर्नाटक की राजधानी में रुके थे। बताया जा रहा है कि ब्रिटेन के राजा और रानी ने बेंगलुरु के बाहरी इलाके में स्थित एक शानदार वेलनेस रिट्रीट, सावक्या

इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ सेंटर में चार दिन बिताए। यह उनका निजी दौरा था जहां उन्होंने इस रिट्रीट सेंटर में अपना स्वास्थ्य उपचार कराया। यह यात्रा किंग चार्ल्स के सिंहासन संभालने के बाद उनकी पहली भारत यात्रा थी। रिपोर्ट के मुताबिक, किंग चार्ल्स और क्वीन कैमिला 27 अक्टूबर को समोआ देश में आयोजित 2024 राष्ट्रमंडल सरकारों के प्रमुखों की बैठक में भाग लेने के बाद सीधे बेंगलुरु पहुंचे थे। उनकी यह यात्रा पूरी तरह निजी थी और इसमें उन्होंने किसी भी सार्वजनिक कार्यक्रम या बैठक में हिस्सा नहीं लिया। बता दें कि ब्रिटेन के राजा चार्ल्स कैंसर से पीड़ित हैं। 5 फरवरी, 2024 को बकिंघम पैलेस ने एक बयान जारी कर इसकी पुष्टि की थी। कैंसर डायग्नोस होने के बाद चार्ल्स की यह पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा है। कहा जा रहा है कि इसी संबंध में उन्होंने वेलनेस रिट्रीट के लिए इसका दौरा किया और अपना इलाज कराया। सावक्या की वेबसाइट के मुताबिक यह 30 एकड़ का ऑर्गेनिक फार्म है। यहां प्राकृतिक चिकित्सा मिलती है।

लेबनान में उलझा इजराइल अब खोलना पड़ा नया मोर्चा

रिजर्व फोर्स भी पड़ गई कम और फंस गए पीएम नेतन्याहू

बेरूत (एजेंसी)। गाजा में इजरायल हमास के बीच संघर्ष शुरू एक साल से ज्यादा का समय बीत चुका है। इस दौरान इजरायल मिडिल ईस्ट में और भी कई मोर्चों

पर जंग लड़ रहा है। अब एक रिपोर्ट के जरिए इजराइल में सैनिकों की कमी होने की बात सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक सेना के रिजर्व सैनिक थक चुके हैं और लेबनान में नए आक्रमण से पहले इजरायल सैनिकों की भर्ती करने के लिए संघर्ष कर रहा है। सेना के मुताबिक 7 अक्टूबर 2023 को हमास के हमले के बाद से लगभग 3,00,000 रिजर्व सैनिकों को बुलाया गया है। इनमें से 18 प्रतिशत 40 साल से अधिक आयु के पुरुष हैं, जिन्हें छूट दी जानी चाहिए थी। गौरतलब है कि इजरायल में पुरुषों और महिलाओं के लिए 18 साल की उम्र के बाद सैन्य सेवा देना अनिवार्य होता है हालांकि इसमें कई छूट लागू होती हैं। पिछले साल 27 अक्टूबर को गाजा में जमीनी हमला शुरू करने के बाद से इस जंग में अब तक 367 सैनिक मारे गए हैं। वहीं लेबनान में हिजबुल्लाह के खिलाफ जंग में 30 सितंबर से इजरायल के 37 सैनिक मारे जा चुके हैं।

सीएजी को आयुष्मान में भारी गड़बड़ियां मिलीं

- केजरीवाल बोले-हमारी सरकार में करोड़ों का फ्री इलाज
- दिल्ली में आयुष्मान लागू न होने पर भाजपा एचसी पहुंची

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को कहा कि सीएजी को आयुष्मान भारत योजना में काफी

गड़बड़ियां मिली हैं। दिल्ली सरकार की योजना के तहत दिल्ली के हर शख्स को मुफ्त इलाज मिलता है। पांच रुपए की गोली हो या करोड़ों का इलाज हो, यह पूरा मुफ्त रहता है। पीएम को दिल्ली की योजना देशभर में लागू करनी चाहिए। केजरीवाल ने कहा कि अगर पीएम कहेंगे तो इसका लाभ उठाने वाले लाखों लोगों के नाम मैं उनको भेज दूंगा।

कनाडा में खालिस्तानियों पर ऐक्शन के पीछे शाह का है हाथ

- कनाडाई मंत्री ने भारत के गृहमंत्री पर लगाया गंभीर आरोप,पर नहीं दिया ठोस सबूत
- सिक्योरिटी कमेटी को दिया बयान, मीटिंग की जानकारी लीक करने की बात मानी

ओटावा (एजेंसी)। ट्रूडो सरकार के एक मंत्री ने कहा कि कनाडा में सिख अलगाववादियों पर एक्शन का आदेश अमित शाह ने दिया था। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, कनाडा के विदेश उप-मंत्री डेविड मॉरिसन ने मंगलवार को एक संसदीय पैनल में यह बयान दिया। मॉरिसन ने संसदीय पैनल में कहा कि उन्होंने अमेरिकी अखबार वॉशिंगटन पोस्ट को बताया था कि इस मामले में भारत के गृह मंत्री शामिल हैं। मॉरिसन ने कहा कि अमेरिकी अखबार को भारत-कनाडा मीटिंग से जुड़ी जानकारी उन्होंने ही दी थी। मॉरिसन ने कहा- वॉशिंगटन पोस्ट के पत्रकार ने मुझे फोन किया और पूछा कि क्या यह (अमित शाह) वही शख्स हैं। मैंने कहा कि हां, यह वही हैं।

दीपों से सजेगा हर द्वार, आज दिवाली है, बाजार में उत्साह

खरीदारी के लिए बाजारों में उमड़ी ग्राहकों की भीड़,कारोबारी खुश

भोपाल (नप्र)। दशहरा और धनतेरस के बाद दिवाली का इंतजार आज खत्म हो जाएगा और आज दीपावली है, जिसके चलते बाजारों में रौनक देखने को मिल रही है। ग्राहकों की इस भीड़ को देख कारोबारी भी खुश नजर आ रहे थे। राजधानी के बाजारों में काफी भीड़ थी। आज दीपावली पर दीप जलाकर घर के कोनों और द्वारों को रोशन किया जाता है ताकि जीवन में सुख, समृद्धि और शांति का वास हो सके। इधर बाजार भी गुलजार था।

दीपों से सजेंगे आंगन

दीपावली के शाम से ही घरों के आंगन और द्वारों को दीपों से सज जाएगाा। इस अवसर पर मिट्टी के दीयों का विशेष महत्व होता है और लोग अपने परिवार के साथ मिलकर दीपों की रोशनी में अपनी खुशियों को साझा करते हैं। घरों में पकवान बनाए जाएंगे और मिठाइयों का आदान-प्रदान किया जाएगा। दीपों की जगमगाहट और उत्साह का रंग देखने लायक होता है जो दिवाली के आगमन का भी संदेश देता है। शहर के घरों और गलियों में दीपों की चमक और उल्लास का माहौल देखा जाएगा। इस पर्व को और खास बना देता है।

हाई कोर्ट का निर्णय

कंपनी ने टीडीएस जमा नहीं किया तो कर्मचारी पर कार्रवाई नहीं

भोपाल (नप्र)। अन्य राज्यों की तरह मप्र में भी हर साल आयकर दाताओं को टीडीएस जमा न होने के नोटिस मिलते हैं। अब दिल्ली हाई कोर्ट के हालिया निर्णय से करदाताओं को राहत मिलेगी। कोर्ट ने निर्णय में कहा है कि अगर कर्मचारी के वेतन से कंपनी ने टीडीएस काटा है पर विभाग के पास जमा नहीं किया तो न तो कर्मचारी के खिलाफ डिमांड नोटिस जारी हो सकता है, न ही उसके भविष्य के आईटी रिफंड से इस राशि को एडजस्ट किया जा सकता है। मप्र में भी ऐसे मामले लगातार आते रहते हैं। आयकर विभाग भी सर्वे करके ऐसे नियोक्ताओं को ढूंढता है जो टीडीएस तो काटते हैं पर उसे आयकर विभाग के पास जमा नहीं करते। ऐसा होने पर कर्मचारी जिसका टीडीएस कट चुका है उसे आयकर नोटिस मिल जाता है। वजह है कि विभाग के पास टीडीएस की राशि जमा नहीं होने पर वह राशि करदाता के स्टेटमेंट 26 एएस में नहीं दिखती है।

पीसीसी चीफ जीतू की टीम बनते ही बिखरने लगी

भोपाल, इंदौर में दो नेताओं ने पद ठुकराया; मुरैना में दंडोतिया बोले- एहसान ब्याज समेत लौटाऊंगा

भोपाल (नप्र)। एमपी में कांग्रेस की प्रदेश कार्यकारिणी घोषित होने के बाद से नेताओं में बगावत और असंतोष नजर आ रहा है। मंगलवार को पीसीसी की दूसरी सूची जारी होने के बाद दो सचिवों ने पद ठुकरा दिया है। इनमें भोपाल कांग्रेस के पूर्व शहर अध्यक्ष मोनू सक्सेना और इंदौर शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अमन बजाज शामिल है। वहीं मुरैना के नेता रामलखन दंडोतिया संयुक्त सचिव बनाए जाने से नाराज हो गए। उन्होंने पीसीसी चीफ जीतू पटवारी से कहा कि आपका ये एहसान ब्याज समेत लौटाऊंगा। बता दें कि एमपी कांग्रेस कमेटी की पहली लिस्ट में 177 पदाधिकारी घोषित किए गए थे। दूसरी लिस्ट में 158 पदाधिकारी बनाए गए। अब पीसीसी में 355 पदाधिकारी हो गए है। इससे पहले पहले लिस्ट आने के बाद कांग्रेस नेता प्रमोद टंडन ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था।

दंडोतिया ने कहा-मेरे सम्मान को ठेस पहुंचाई- कांग्रेस के संयुक्त सचिव बनाए गए रामलखन दंडोतिया ने कहा, दूसरी लिस्ट में मुझे सहायक सेक्रेटरी बनाया है। मुझसे इस बारे में बात नहीं की। अगर बताया होता तो मैं मना कर देता। जीतू पटवारी को शायद नहीं मालूम होगा कि 2022 में कमलनाथ की एआईसीसी लिस्ट में 78वें नंबर पर मेरा नाम अंकित है। मुझे जनरल सेक्रेटरी बनाया गया था। 2017 में दीपक बावरिया, अरुण यादव ने मुझे सेक्रेटरी बनाया था। इस समय मुझे सहायक सचिव बनाकर मेरे सम्मान को ठेस पहुंचाई है। मैं नहीं चाहता कि मैं पद लेकर घर बैठा रहूं।

मोनू सक्सेना भोपाल | रामलखन दंडोतिया मुरैना | अमन बजाज इंदौर

कार्यकर्ताओं से बात कर आगे लूंगा फैसला- दंडोतिया ने कहा कांग्रेस पार्टी के लिए साधारण कार्यकर्ता के रूप में मैं पूरी निष्ठा से काम करूंगा। मैं 12 दिनों से विजयपुर के वीरपुर सेक्टर में काम कर रहा था। कल शाम को मैं वापस आ गया। अब दिवाली है तो दो चार दिन घर पर रहकर कार्यकर्ताओं से बात करूंगा। उसके बाद आगे की रुपरेखा तय होगी। ये जिले के नेताओं का षड्यंत्र नहीं हैं। जब हाकिम बेदर्द हो वहां फरियाद क्या करना?

इंदौर में भी पद लेने से इनकार, नवनियुक्त सचिव अमन बजाज ने पद ठुकराया- इंदौर में कार्यवाहक शहर कांग्रेस अध्यक्ष अमन बजाज ने जीतू पटवारी की टीम में पद ठुकरा दिया। उन्हें जीतू की टीम में सचिव बनाया गया था। जिसके बाद उन्हें ये पद लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने जीतू पटवारी को पत्र में लिखा है।

भोपाल में नवनियुक्त सचिव मोनू सक्सेना का इस्तीफा- भोपाल कांग्रेस के शहर अध्यक्ष रहे प्रदीप सक्सेना 'मोनू' को जीतू पटवारी की टीम में सचिव बनाया गया है। मोनू ने सचिव पद लेने से इनकार करते हुए सोशल मीडिया पर इस पद से इस्तीफा दिया है।

158 पदाधिकारियों की दूसरी लिस्ट हुई जारी- मंगलवार देर रात पीसीसी की दूसरी लिस्ट जारी की गई है। इसमें 25 सदस्यीय पीएसी समेत 84 सचिव और 36 संयुक्त सचिव नियुक्त किए गए हैं। पीएसी में कमलनाथ, नकुलनाथ के साथ ही दिग्विजय सिंह को भी शामिल किया गया है। पहली लिस्ट में कुल 177 पदाधिकारी घोषित किए गए थे। दूसरी लिस्ट में कुल 158 पदाधिकारी बनाए गए हैं। दोनों सूचियों को मिलाकर अब एमपी कांग्रेस कमेटी में 335 पदाधिकारी हो गए हैं। लिस्ट आने के डेढ़ घंटे बाद ही नवनियुक्त सचिव मोनू सक्सेना ने किसी और को मौका देने की बात कहते हुए इस्तीफा दे दिया। बता दें कि पहली लिस्ट जारी होने के बाद पार्टी नेताओं में भारी नाराजगी थी। इंदौर कांग्रेस के नेता प्रमोद टंडन ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह भी सवाल उठा रहे थे। वहीं, पूर्व सीएम कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ को पीसीसी की टीम में जगह नहीं दिए जाने पर बीजेपी की ओर से भी हमला हो रहा था। नेताओं की नाराजगी बढ़ती देख दूसरी लिस्ट जारी की गई है।

राज्यपाल श्री पटेल ने प्रदेशवासियों को दीपावली पर्व की बधाई और शुभकामनाएँ दी

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने प्रदेशवासियों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई दी है। प्रदेशवासियों की सुख, समृद्धि और खुशहाली की मंगल कामना की है। नागरिकों से कहा है कि दीपावली खुशियाँ बाँटने का पर्व है। वंचितों, जरूरतमंदों के जीवन में खुशियों की ज्योत जलाकर पर्व को मनाया जाना चाहिए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि दीपावली धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक त्यौहार है। यह लोगों को एक साथ लाने का उत्सव है। दीपावली का पर्व बताता है कि छोटे-छोटे दीप भी एकजुट होकर अंधकार को पराजित कर सकते हैं। उसी तरह हम सब भी मिलकर राष्ट्र और समाज की समस्याओं और चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं। दीपावली का पर्व नव-निर्माण के संकल्प का अवसर है। राज्यपाल ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि दीपावली का उत्सव अनुशासित, शुद्ध, स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में मनाएं। उत्साह, उमंग के साथ समाज में भाईचारे और सद्भाव की गौरवशाली परंपराओं को मजबूत बनाने में योगदान दें।

अभी आगरा कैंट उतरना पड़ता है

- **भोपाल एक्सप्रेस अब मथुरा में रुकेगी, 200 यात्री जाते हैं रोज**

भोपाल (नप्र)। भोपाल से हर दिन मथुरा-वृंदावन और गोवर्धन परिक्रमा के लिए जाने वाले 200 से ज्यादा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रेलवे शान-ए-भोपाल एक्सप्रेस को मथुरा में हाल्ट देने की तैयारी कर रहा है। संभवतः दिसंबर में श्रद्धालुओं को भोपाल एक्सप्रेस से सीधे मथुरा आवागमन करने का मौका मिलने लगेगा। सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया का कहना है कि मांग को रेल मंत्रालय भेजा जा रहा है। अभी रोज भोपाल एक्सप्रेस से मथुरा के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं को आगरा कैंट या दिल्ली उतरना पड़ता है। इसके साथ ही भोपाल को लखनऊ के लिए 8 कोच वाली सिटिंग और पाटलिपुत्र के लिए 20 कोचों की स्लीपर वंदे भारत एक्सप्रेस नवंबर में मिलने जा रही है।

आपत्तिजनक फोटो लेकर किया दुष्कर्म

- **मोबाइल देने के बहाने घर में घुसा था युवक, शिकायत पर भेजा जेल**

भोपाल (नप्र)। बिलखिरिया इलाके में महिला के साथ ज्यादती करने का मामला सामने आया है, जहां युवक मोबाइल देने के बहाने में घर में घुसा था। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए आरोपी को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

घर में घुसकर किया दुष्कर्म- पुलिस के मुताबिक 24 वर्षीय महिला कोकता में रहती है और दुकान चलाती है। 25 अक्टूबर को आरोपी रवि ठाकुर महिला के घर मोबाइल और सिम देने के लिए पहुंचा था। जहां उसने महिला के कुछ आपत्तिजनक फोटो भी लिए थे। उसके बाद आरोपी ने पीड़िता को धमकाते हुए उसके साथ दुष्कर्म किया, इसके बाद से वह लगातार महिला का शोषण कर रहा था। परेशान होकर महिला ने आरोपी की शिकायत की, जिस पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। साथ ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है, वही मामले की जांच जारी है।

दीपोत्सव का शुभारंभ

- **बटेश्वर-गौरा संग महालक्ष्मी का 11 लाख की करेंसी व आभूषणों से श्रृंगार**

भोपाल(नप्र)। भोपाल के सोमवारा स्थित बड़वाले महादेव मंदिर में धन्वंतरि जयंती एवं भौम प्रदोष के अवसर पर मंगलवार को बाबा बटेश्वर , गौरा व मां लक्ष्मी का अमेरिकन डायमंड, नगों व 11 लाख के नोट और जेवरों से श्रृंगार किया गया। बाबा के दरबार में पहली बार मां लक्ष्मी की प्रतिमा विराजमान की गई और 2100 दीप जलाए गए। 11 लाख रुपए की करेंसी से मां लक्ष्मी का श्रृंगार बना आकर्षण का केन्द्र। मंदिर सेवा समिति एवं ट्रस्ट के सदस्य संजय अग्रवाल एवं प्रमोद नेमा ने बताया कि इस अवसर पर बाबा का सप्त औषधि, विजया एवं भस्मी से अभिषेक किया गया, इसके बाद बटेश्वर व मां गौरा का रत्नों व आभूषणों से राजसी श्रृंगार किया गया। इस दौरान 2100 दीपक जलाकर पूरे मंदिर परिसर को रोशन किया गया व महाआरती की गई।

हम सब मिलकर एक मजबूत और आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के निर्माण में सहयोग करें : मंत्री श्री चौहान

- **दीपोत्सव पर्व की प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएं**

भोपाल (नप्र)। अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान ने दीपोत्सव पर्व की प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं एवं बधाई दी हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द मोदी के 'लोकल फोर वोकल अभियान' के तहत मैं स्वयं अपने स्थानीय विक्रेताओं से दीप पर्व की खरीदारी करूंगा । उन्होंने अपील कि है कि आप सभी अपने नजदीक के छोटे फुटकर विक्रेताओं से वस्तुएं खरीदकर दीपपर्व मनाने में अपना सहयोग अवश्य करे। उन्होंने कहा कि आइए, हम सब मिलकर एक मजबूत और आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के निर्माण में सहयोग करे। यह पर्व आप सभी के जीवन सुख, शांति और समृद्धि लाए यही कामना करता हूँ। मध्यप्रदेश स्थापना दिवस की प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएं अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान ने सभी प्रदेशवासियों को मध्य प्रदेश स्थापना दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार सहित सभी क्षेत्रों में निरंतर प्रगति कर रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में अनेक महत्व के निर्णय लिए गए है, तथा विकास के कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए है। इस मौके पर उन्होंने प्रदेशवासियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने स्थापना दिवस पर प्रदेशवासियों को दी शुभकामानाएं

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास, संसदीय कार्य मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने प्रदेशवासियों को मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस पर बधाई दी है। उन्होंने अपने संदेश में कहा है कि मध्यप्रदेश ने पिछले दो दशकों में विकास की नई ऊँचाइयों को छूकर कीर्तिमान स्थापित किया है। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा है कि राज्य सरकार ने प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों की खुशहाली के लिये अनेक महत्वपूर्ण फैसले लिये हैं। प्रदेश सरकार शहरी क्षेत्रों में नागरिकों को सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये वचनबद्ध है। उन्होंने प्रदेशवासियों से आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश बनाने के लिये एक जुट होकर कार्य करने का आग्रह भी किया है।

हम सब प्रदेश के विकास और कल्याण के लिए प्रयासरत रहें : मंत्री डॉ. शाह

- **प्रदेशवासियों को दी दीप पर्व की शुभकामनाएं**

भोपाल (नप्र)। दीपों का पर्व दीपावली सभी प्रदेशवासियों के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और खुशियों की अनगिनत रोशनी लेकर आये। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने दीपावली के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों के जीवन में नये उमंग और उत्साह की कामना की है। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने कहा है कि लक्ष्मी और गणेश की कृपा से सबका हर दिन मंगलमय हो, सबके घर में सुख-शांति और वैभव की भरमार हो। उन्होंने सभी को दीप पर्व की हृदय से शुभकामनायें देकर अपील की है कि इस दीपावली हम सब एकजुट होकर हमारे प्रदेश के विकास और कल्याण के लिए प्रयासरत रहें और प्रदेश को उन्नति की नई ऊंचाइयों पर ले जायें।

मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं भी दीं- जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने प्रदेशवासियों को मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि एक नवंबर 1956 को गठित मध्यप्रदेश ने विकास के कई आयाम तय किये हैं। विभिन्न केन्द्रीय योजनाओं एवं विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में हमारा मध्यप्रदेश अव्वल स्थान पर है। डॉ. शाह ने कहा है कि मध्यप्रदेश को देश का 'अग्रणी प्रदेश' बनाने में प्रदेश के हर नागरिक का सहयोग और भावों से भरी सक्रिय सहभागिता बेहद जरूरी है।

दिवाली पर भोपाल, इंदौर-ग्वालियर में धूप खिलेगी

दक्षिणी हिस्से में बादल छाए रहेंगे, तेज बारिश का अनुमान नहीं; नवंबर में सर्दी तेज होगी

भोपाल (नप्र)। इस दिवाली भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन समेत प्रदेश के ज्यादातर हिस्सों में मौसम साफ रहेगा और धूप खिली रहेगी। दक्षिणी हिस्से के कुछ जिलों में अगले 2 दिन बादल छाए रह सकते हैं। बुधवार को भी ऐसा ही मौसम रहेगा। नवंबर में सर्दी का असर फिर तेज होगा। मौसम विभाग के मुताबिक, अभी दक्षिणी छत्तीसगढ़ और ओडिशा के ऊपर एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव है। इसका असर दक्षिणी हिस्से यानी, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, बैतूल, बुरहानपुर, बालाघाट, सिवनी समेत अन्य जिलों में देखने को मिलेगा। मालवा-निमाड़ के कुछ जिलों में भी बादल छाए रह सकते हैं। ऐसा मौसम अगले 2 दिन यानी, 30 और 31 अक्टूबर को रहेगा।

अगले 24 घंटे में यहां बदला रहेगा मौसम- आईएमडी, भोपाल के अनुसार, अगले 24 घंटे में कहीं भी बारिश होने की संभावना नहीं है, पर साइक्लोनिक सर्कुलेशन की वजह से कहीं-कहीं बूंदाबांदी हो सकती है। बादल छाए रहने से माहौल में ठंडक बनी रहेगी। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन समेत अन्य जिलों में धूप निकली रहेगी।

पचमढ़ी में दिन-रात दोनों ही ठंडे- प्रदेश के हिल स्टेशन पचमढ़ी में मौसम ठंडा है। यहां दिन का तापमान 28.4 डिग्री और रात में 14.6 डिग्री है। भोपाल, इंदौर, खंडवा, खरगोन, रायसेन, राजगढ़, रतलाम, उज्जैन, मंडला, नौगांव, टीकमगढ़ में रात का तापमान 20 डिग्री है। यदि दिन की बात करें तो ज्यादातर जिलों में दिन का तापमान 30 डिग्री से ज्यादा चल रहा है। मंगलवार को खजुराहो में पारा 36.2 डिग्री दर्ज किया गया।

अक्टूबर के आखिरी दिनों में ऐसा ही रहता है मौसम- अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में प्रदेश में रातें ठंडी और दिन में गर्मी रहती है। पिछले 10 साल से यही ट्रेंड है। अबकी बार भी ऐसा ही मौसम है। भोपाल, इंदौर-ग्वालियर समेत कई शहरों में रात का टेम्प्रेचर 18 डिग्री से नीचे पहुंच गया है। वहीं, हिल स्टेशन पचमढ़ी सबसे ठंडा है। दूसरी ओर, दिन में तापमान बढ़ा हुआ है। मौसम विभाग के अनुसार, अक्टूबर का महीना चेंज ओवर पीरियड रहता है। इस महीने मानसून विदाई पर होता है। इससे आसमान साफ हो जाता है। इस कारण दिन में गर्मी और रात में ठंड पड़ती है। उत्तर भारत में पश्चिमी विक्षोभ एक्टिव होने से बारिश होती है। अबकी बार भी ऐसा ही मौसम है। 23 अक्टूबर के बाद बारिश थम गई थी, जो रविवार से फिर शुरू हो गई। सोमवार को भी पानी बरसा। पिछले 24 घंटे में बालाघाट, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, डिंडौरी और अनूपपुर में बूंदाबांदी हुई।

भोपाल से लखनऊ का किराया 5500, लौटने का 1100

दिवाली के चलते बस ऑपरेटर ने की मनमानी बढ़ोतरी, नर्मदापुरम के लिए देना पड़े 220 रुपए

भोपाल (नप्र)। फेस्टिव सीजन में मध्यप्रदेश से गुजरने वाली ट्रेनें खचाखच भरी है। ऐसे में यात्री लंबी दूरी के लिए बसों से सफर करने को मजबूर हैं। लेकिन, इसके लिए कई गुना ज्यादा किराया देना पड़ रहा है। ट्रैवल कंपनियों ने भोपाल से अन्य शहरों के लिए जाने वाली बसों का किराया मनमाना बढ़ा दिया है। जो पिछले कुछ महीनों की तुलना में चार गुना तक अधिक है। इनमें भोपाल से पुणे, मुंबई, जयपुर और अहमदाबाद की तरफ जाने वाली बसें शामिल हैं। 30 अक्टूबर तक की स्थिति में 700 रुपए का टिकट बढ़कर 4500 से 5000 रुपए तक पहुंच गया है। भोपाल से लखनऊ जाने का बेत्रवंती ट्रेवल्स का किराया (रेड बस ऐप पर) अधिकतम 5500 है। जबकि वापसी 1100 रुपए में हो रही है। यही नहीं भोपाल से नर्मदापुरम तक के 72 किमी के सफर के लिए 220 रुपए वसूले जा रहे हैं।

लखनऊ-पुणे और मुंबई का टिकट सबसे महंगा

भोपाल से मुंबई और पुणे जाने का किराया सबसे ज्यादा है। साधारण दिनों में यह टिकट 900-1100 तक होता है। जबकि 30 अक्टूबर को यही टिकट बढ़कर 2500 से 5500 तक का मिल रहा है। भोपाल से जाने वाली किसी भी पैसेंजर्स के लिए यह अभी तक का सबसे अधिकतम किराया है। पिछले साल 2023 में यह किराया 5 हजार तक था।

दीपावली पर जरूरतमंद बच्चों को नए कपड़ों का वितरण

- **'द' लायन सिटी वेलफेयर सोसाइटी भोपाल का सराहनीय कार्य**

भोपाल (नप्र)। 'द लायन सिटी वेलफेयर सोसायटी', युवा पत्रकार वेलफेयर क्लब और हिन्दू हेल्पलाइन के संयुक्त तत्वावधान में दीपावली के अवसर पर जरूरतमंद बच्चों के लिए निःशुल्क कपड़ों का वितरण किया गया। संत हिरदाराम नगर के आसपास की आंगनबाड़ियों और स्कूलों में सैकड़ों नन्हे-मुन्ने बच्चों को नए कपड़े प्रदान किए गए। सोसायटी के अध्यक्ष कमलेश रायचंदानी ने बताया कि दीपावली से 10 दिन पहले और बाद में भी यह सेवा जारी रहेगी। इस कार्य में प्रमुख योगदान देने वाले पवन यादव का विशेष उल्लेख किया गया, जिन्होंने बड़ी संख्या में नए वस्त्र उपलब्ध कराए। इसके साथ ही कई माताएं भी कपड़े दान करने में सक्रिय रहीं। उन्होंने आगे कहा कि हमारा उद्देश्य जरूरतमंद बच्चों और बेटियों को खुशियाँ देना है। इस साल हमने 1001 से अधिक बच्चों को नए कपड़े प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। इस आयोजन में मुन्नाभाई आडतानी, गणेश पुरीया, रमेश कृष्णानानी, जॉनी कुमार मूलचंदानी और अन्य सदस्य भी मौजूद रहे।

अंधकार हरता,नन्हा-सा इक दीप

नलिन खोईवाल

आंगन रोशन दीप से, आलोकित घर बार ।
रूप चंद्रमा सा लगे,जगमग है त्योहार ।।

अंतस में दीये जले,मचले हैं अरमान ।
ज्यों मंदिर में आरती,मस्ज़िद बीच अज़ान ।।

दीवाली के पर्व पर, लाए स्वजन समीप ।
अंधकार हरता रहा,नन्हा-सा इक दीप ।।

दीपक रोशन हो वहां, जिस घर है अँधियार ।
सच ही कहता कवि नलिन, हो जग में उजियार ।।

कुमकुम के पगले लिए,माँ आई है द्वार ।
माँ की कर आराधना, देगी पुन्य अपार ।।

स्वच्छ बने वातावरन, हम सब करें प्रयास ।
हर इक मन से तम मिटे, हो हर ओर उजास ।।

जीवन में सुख,शांति हो,लक्ष्मी का हो वास ।
घर में हो न अभाव कुछ,धन वैभव हो पास ।।

खुशहाली का पर्व यह,कर लो रूप निखार ।
रूप चाँदनी सा लगे , करता जब श्रृंगार ।।

माँ लक्ष्मी की आरती, कर अरपन फल फूल ।
सब मिलकर वंदन करें, हो सब विधि अनुकूल ।।

मप्र स्थापना दिवस (1 नवंबर) पर विशेष

डबल इंजन की सरकार में आगे बढ़ता मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश के इतिहास, भूगोल और संस्कृति पर दृष्टिपात करें तो यह राज्य अनेक विविधताओं को अपने में समेटे हुए है। प्रचुर वन संपदा, अथाह जलराशि वाली नदियां, विपुल खनिज भंडार, खूबसूरत पर्यटन स्थल, पुरातात्विक धरोहर आदि सब कुछ तो उपलब्ध है इस प्रदेश में। नर्मदा घाटी में मिले साक्ष्यों से स्पष्ट है कि इस अंचल में अनेक सभ्यताएं पुष्पित एवं पल्लवित हुई हैं। धार्मिक नगरी उज्जैन में भगवान महाकाल का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है तो ओरछा में राम राजा विराजमान हैं। चित्रकूट की महिमा तो अवर्णनीय हैं। यहीं गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान श्री राम के दर्शन किए थे। क्षिप्रा के तट पर संदीपनी आश्रम में श्रीकृष्ण और उनके सखा सुदामा ने शिक्षा प्राप्त की थी। राजा विक्रमादित्य, महाकवि कालिदास, राजा भोज एवं संत सिंगाजी की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि होने का सौभाग्य मध्यप्रदेश को ही प्राप्त है। सॉंची में विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप हैं तो सोनागिरी में प्रसिद्ध जैन मंदिर। खजुराहो में तो पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं।

सुरेश पचौरी
लेखक भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री हैं।

हम मध्यप्रदेश का 69 वां स्थापना दिवस मना रहे हैं। भारत का हृदय कहा जाने वाला मध्यप्रदेश 1 नवम्बर 1956 को अस्तित्व में आया, जिसका गठन तत्कालीन मध्यभारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल रियासत तथा महाकौशल के कुछ हिस्से को एकीकृत कर किया गया था। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर तथा झीलों की नगरी कहे जाने वाले भोपाल को प्रदेश की राजधानी बनाया गया। 44 वर्षों के बाद प्रदेश का विभाजन हुआ और जनता की मांग पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा नए राज्य छत्तीसगढ़ का गठन किया गया। अतीत पर नजर डाली जाए तो मध्यप्रदेश ने अपने गठन और विभाजन के दौर में अनेक उतार- चढ़ाव देखे हैं लेकिन अब यह राज्य प्रगति के नये सोपान नाप रहा है। डबल इंजन की सरकार इस राज्य की तस्वीर और तकदीर बदलने की दिशा में शिद्दत से लगी हुई है। प्रदेश की जनता की खुशहाली और समरस विकास के लिए तमाम जनहितैषी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जो इस बात की गवाह हैं कि मध्यप्रदेश आने वाले दिनों में सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहेगा। इस विकासोन्मुखी अभियान में जहां एक ओर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सुस्पष्ट व दूरगामी सोच है, वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश सरकार की प्रदेशवासियों की सेवा करने की प्रतिबद्धता है।

मध्यप्रदेश के इतिहास, भूगोल और संस्कृति पर दृष्टिपात करें तो यह राज्य अनेक विविधताओं को अपने में समेटे हुए है। प्रचुर वन संपदा, अथाह जलराशि वाली नदियां, विपुल खनिज भंडार, खूबसूरत पर्यटन स्थल, पुरातात्विक धरोहर आदि सब कुछ तो उपलब्ध है इस प्रदेश में। नर्मदा घाटी में मिले साक्ष्यों से स्पष्ट है कि इस अंचल में अनेक सभ्यताएं पुष्पित एवं पल्लवित हुई हैं। धार्मिक नगरी उज्जैन में भगवान महाकाल का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है तो ओरछा में राम राजा विराजमान हैं। चित्रकूट की महिमा तो अवर्णनीय हैं। यहीं गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान श्री राम के दर्शन किए थे। क्षिप्रा के तट पर संदीपनी आश्रम में श्रीकृष्ण और उनके सखा सुदामा ने शिक्षा प्राप्त की थी। राजा विक्रमादित्य, महाकवि कालिदास, राजा भोज एवं संत सिंगाजी की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि होने का सौभाग्य मध्यप्रदेश को ही प्राप्त है। सॉंची में विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप हैं तो सोनागिरी में प्रसिद्ध जैन मंदिर। खजुराहो में तो पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं।

दरअसल, मध्यप्रदेश जितना विस्तृत है, उतना ही ऐतिहासिक भी है। चंद्रशेखर आजाद के शौर्य, रानी दुर्गावती के बलिदान, टाट्या मामा की शहादत, छत्रसाल बुंदेला के पराक्रम, देवी अहिल्या के सुशासन को मध्यप्रदेश की विरासत के रूप में रेखांकित किया जाता है। संगीत सम्राट तानसेन तथा उस्ताद अलाउद्दीन खां तो संगीत के क्षेत्र की अनमोल धरोहर हैं। न जानें कितने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की कुर्बानी प्रदेश के कोने-कोने में आज भी जीवंत है।

नर्मदा, सोन, चंबल, बेतवा, केन, ताप्ती, पेंच, पार्वती, बेनगंगा, रेवा तथा माही आदि नदियों के उद्गम स्थल यहीं पर हैं। ये नदियां प्रदेश की चारों दिशाओं में प्रवाहित होती हैं। नर्मदा को तो मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी माना जाता है। प्रदेश के एक तिहाई भूभाग के निवासियों को नर्मदा आर्थिक रूप से संपन्न बनाती है। नर्मदा नदी पर निर्मित सरदार सरोवर, इंदिरासागर और ओंकारेश्वर परियोजनाओं से प्रदेश की खुशहाली और समृद्धि के द्वार खुल गये हैं। भारतीय जनता पार्टी की सरकार के शासन काल में नर्मदा को क्षिप्रा से जोड़ा जा चुका है। केन को बेतवा से जोड़ने की पहल जारी है।

केन्द्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन में सबसे आगे मध्यप्रदेश

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशा- निर्देशन में म.प्र. तेजी से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं के क्रियान्वयन और उनका लाभ पात्र हितग्राहियों को दिलाने में म.प्र. देश में लगातार अग्रणी बना हुआ है। पीएम स्वनिधि योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पीएम आवास योजना, कृषि अवसंरचना निधि, प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना, पीएम स्वामित्व योजना, नशामुक्त भारत अभियान, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन और स्वच्छ भारत मिशन आदि योजनाओं के क्रियान्वयन में म.प्र. देश में सबसे आगे है।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में मध्यप्रदेश में 8 लाख 20 हजार 575 आवास बनाए जा चुके हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में प्रदेश में 36 लाख 25 हजार 20 आवासों का निर्माण किया जा चुका है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत म.प्र. में 72 हजार 965 किलोमीटर लंबी सड़कें बन चुकी हैं। किसान क्रेडिट कार्ड योजना में 65 लाख 83 हजार 726 किसानों के क्रेडिट कार्ड तैयार हो गए हैं। अटल पेंशन योजना में 26 लाख 15 हजार (शत प्रतिशत) हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया है। पीएम स्वनिधि योजना के क्रियान्वयन में म.प्र. देश में पहले नम्बर पर है।

यह एक सुखद पक्ष है कि मध्यप्रदेश सरकार की दूरगामी सोच के चलते कृषि क्षेत्र में उन्नति, औद्योगिक विकास, आईटी एवं पर्यटन में बढ़ते सेवा-क्षेत्रों से राज्य के आर्थिक विकास को मजबूती मिल रही है। वर्ष 2023-24 का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जी.एस.डी.पी.) 13,63,327 करोड़ है, जो पिछले वर्ष (2022-23) की तुलना में 9.37 प्रतिशत अधिक है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रदेश में प्रति व्यक्ति की आय 1,42,562 रुपये हो गयी है, जो आधार वर्ष (2011-12) की तुलना में चार गुना अधिक है। म.प्र. की कृषि विकास दर देश के अन्य राज्यों की तुलना में काफी अधिक है। म.प्र. से पिछले वर्ष 21 लाख टन गेहूं निर्यात हुआ, जो पूरे देश के गेहूं निर्यात का 45 प्रतिशत है। म.प्र. गेहूं निर्यात के मामले में देश में नम्बर एक पर है। इसी प्रकार 2023-24 में प्रदेश में 201.22 लाख टन दूध का उत्पादन हुआ, जिससे मध्यप्रदेश देश में दुग्ध उत्पादन में तीसरे नम्बर पर है। यशस्वी प्रधानमंत्री द्वारा मुख्य मंत्री किसान योजना के तहत प्रदेश के 81 लाख से अधिक किसानों के खाते में 1624 करोड़ रुपए की सहायता राशि का अंतरण किया । मध्यप्रदेश में बिजली की बात की जाए तो विद्युत उत्पादन की स्थापित क्षमता 28774 मेगावाट है, जिसमें 22328 मेगावाट बिजली पारंपरिक स्रोत से तथा 5638 मेगावाट नवकरणीय ऊर्जा स्रोत से उत्पादित हो रही है। प्रदेश में कृषि और उद्योगों को जरूरत के हिसाब से पर्याप्त बिजली मिल रही है।

मध्यप्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार विस्तार कर रही है। प्रदेश में आयुष्मान भारत योजना में 4 करोड़ 2 लाख 22 हजार 893 हितग्रहियों को डिजिटल आयुष्मान कार्ड जारी किये जा चुके हैं। आयुष्मान भारत योजना में सरकार प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपए तक अस्पताल में भर्ती व्यय प्रदान करती है। आयुष्मान भारत योजना के क्रियान्वयन में म.प्र. देश का प्रथम राज्य बन चुका है।

म.प्र. में बेटी बोझ नहीं, वरदान

मध्यप्रदेश में बेटी अब बोझ न होकर वरदान बन गयी है। प्रदेश की महिलाओं के कल्याणार्थ राज्य सरकार द्वारा तमाम योजनाएं चलाई जा रही हैं। लाड़ली बहना, लाड़ली लक्ष्मी, कन्यादान योजनाओं द्वारा महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त बन रही हैं, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक ठोस कदम है। इन लाभकारी योजनाओं का अनुसरण देश के कई राज्यों ने किया है। इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से महिलाओं के स्वास्थ्य व पोषण स्तर में सुधार आया है। म.प्र में लाड़ली बहना योजना के तहत 1.29 करोड़ महिलाओं को प्रतिमाह 1250 रुपए दिये जा रहे हैं। लाड़ली लक्ष्मी योजना में बालिका के जन्म के समय 1.43 लाख रुपयों का आश्वासन प्रमाण पत्र दिया जाता है। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से प्रदेश में सामूहिक विवाह प्रथा आरंभ हुई है। इस योजना में प्रदेश सरकार नवविवाहितों को आर्थिक सहायता देती है। 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' योजना के तहत बेटियों को हायर सेकण्डरी तक नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान है।

अपार संभावनाएं हैं मध्यप्रदेश में

इसमें कोई दो राय नहीं है कि म.प्र. अपार संभावनाओं वाला प्रदेश है। इसमें समृद्ध राज्य बनने की क्षमता तथा संसाधन दोनों मौजूद हैं। प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर मध्यप्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने का संकल्प लेने की जरूरत है। मध्यप्रदेश के निवासियों के लिए यह गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मध्यप्रदेश से आत्मीय लगाव है। उम्मीद की जानी चाहिए कि यशस्वी प्रधानमंत्री जी के दिशा निर्देशन में मध्यप्रदेश विकास की तीव्र उड़ान भरेगा। मध्यप्रदेश की विकास यात्रा में हमें भी अपनी जिम्मेदारी एवं सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी। यही वक्त का तकाजा है।

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस 1 नवम्बर पर विशेष

मध्यप्रदेश के विकास की रोमांचक यात्रा

अवनीश सोमकुंवर
उप संचालक, जनसंपर्क विभाग मध्य प्रदेश

मध्यप्रदेश की रोमांचक विकास यात्रा के बारे में विस्तार से जानते हुए 1911 की जनगणना रिपोर्ट के पन्ने पलटना भी रोमांचक अनुभव से कम नहीं। यह रिपोर्ट आईसीएस जे.सी. मार्टिन ने तैयार की थी। वे सेंट्रल प्रोविंस एंड बेरार के सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ सेंसस ऑपरेशंस थे। वर्ष 1901 से 1910 के दशक में बेरार प्रोविंस को सेंट्रल प्रोविंस में शामिल किया गया। इस प्रकार सेंट्रल प्रोविंस के 8 ब्रिटिश जिले, बेरार के चार जिले और 15 सामंती राज्यों को मिलाकर जनगणना होनी थी। यह पांचवीं जनगणना थी जो 10 मार्च 1911 में शुरू हुई। कुल 91,770 गणनाकार , 8,422 सुपरवाइजर और 675 चार्ज सुपरिंटेंडेंट मिलाकर एक लाख से ज्यादा का स्टाफ जनगणना के लिए था। यह क्षेत्र एक लाख 31 हजार वर्ग मील था। जनसंख्या 160 लाख थी। यह ब्रिटिश इंडिया के कुल क्षेत्रफल का 7.3त्न था जो जापान के क्षेत्रफल से थोड़ा काम। आज का मध्य प्रदेश जो पहले मध्य भारत प्रांत था वह इसी सेंट्रल प्रोविंस एंड बेरार का भाग था।

वर्ष 1911 की सेंसस रिपोर्ट के साक्षरता संबंधित आठवें चैप्टर में कुछ बेहद दिलचस्प आंकड़े मिलते हैं। इसमें अखबारों की संख्या और प्रसार संख्या के आंकड़े भी प्रकाशित किए गए। हिंदी, अंग्रेजी, मराठी , गुजराती दैनिक, मासिक, पाक्षिक और साप्ताहिक पत्रों की संख्या 27 थी और प्रसार संख्या 10,627 थी। इसी प्रकार संस्कृत मारवाड़ी, गुजराती , तमिल , हिंदी , उर्दू और अंग्रेजी की कुल 640 किताबें इस दौरान प्रकाशित हुई थी। सेकेंडरी स्कूलों की संख्या 444 थी जिसमें 53,308 बच्चे पढ़ते थे प्राथमिक स्कूल 3865 थे जिसमें 277620 बच्चे पढ़ते थे। प्रत्येक 30 व्यक्ति में से एक साक्षर था। अंग्रेजी साक्षरता का अलग से आकलन किया गया था। प्रत्येक 10,000 की जनसंख्या में 55 पुरुष और पांच महिलाएं अंग्रेजी में साक्षर थीं। नागपुर, जबलपुर, सागर और अमरावती में अंग्रेजी पढ़ने-बोलने वाले ज्यादा थे क्योंकि इन्हीं जगहों पर अंग्रेजी अफसरों की पोस्टिंग होती थी और वे अंग्रेजी में लोगों से बात करते थे। एक और दिलचस्प तथ्य यह है कि 1901 से 1910 के बीच 562 मील रेलवे रूट था रेलवे में सबसे ज्यादा 36,367 लोगों को रोजगार मिला था। दूसरे नंबर पर सिंचाई विभाग था जिसमें 18,473 को नौकरियां मिली थी।

मप्र का जन्म

स्वतंत्रता मिलने तक इस विशाल क्षेत्र का विकास आगे बढ़ता रहा। बाद में भाषा, सांस्कृतिक आधार पर और प्रशासनिक प्रबंधन की दृष्टि से अलग राज्य बनाने की मांग शुरू हुई। देश की एकता बनाए रखते हुए क्षेत्रीय संतुलन की बातें मुखर हुई। परिणाम स्वरुप 29 दिसंबर 1953 को राज्यों के पुनर्गठन आयोग बनाया गया। जस्टिस सैयद फैसल अली अध्यक्ष, हृदय नाथ कुंजूरू, कोवल्लम माधव पणिक्कर इसके सदस्य थे। आयोग ने 30 सितंबर 1955 को सिफारिशों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें मुख्य रूप से जिन बिंदुओं पर राज्यों का पुनर्गठन किया जाना था उसमें परिवर्तन के परिणाम, भारत की एकता और सुरक्षा , भाषा और संस्कृति, वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, राष्ट्रीय विकास की योजना, राज्यों के आकार जैसे बिंदुओं का ध्यान रखा गया था। आयोग की अनुशंसाओं को अमल में लाने के लिए संविधान में संशोधन अनिवार्य प्रक्रिया थी। फलस्वरूप लोकसभा में 18 अप्रैल 1956 को संविधान नवम संशोधन विधेयक पेश हुआ। इसे अक्टूबर में राष्ट्रपति की मंजूरी मिली और 1 नवंबर 1956 को यह पूर्ण रूप से अधिनियम बना। इसके साथ ही सेंट्रल प्रोविंस एंड बेरार में शामिल मराठी भाषी जिले महाराष्ट्र में शामिल हो गए और मध्य प्रदेश में 43 जिले बचे। बाद में दो जिलों का आकर के अनुसार विभाजन हुआ और 45 जिलों का मध्य प्रदेश बना। जनसंख्या वृद्धि, वैश्विक विकास के मानदंडों के साथ कदमताल करते हुए मध्य प्रदेश का विकास निरंतर होता रहा। वर्ष 2000 में जन आकांक्षाओं के अनुरूप छत्तीसगढ़ राज्य बना। मानव संसाधन, परिसंपत्तियों और प्राकृतिक संसाधनों का स्वाभाविक रूप से बटवारा हुआ । विकास की गति रुकी नहीं। विकास का आकलन करने के परंपरागत तरीकों, मापदंडों के अलावा भी कई नए क्षेत्रों में मध्य प्रदेश नई उपलब्धियों और नए कीर्तिमान के साथ आगे बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी जैसे नए क्षेत्रों में मध्यप्रदेश गतिशील है। अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ जिस प्रकार कदमताल कर रहा है वह सराहनीय है। प्रशासनिक नवाचारों और विकास प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी जनित नवाचारी हस्तक्षेप से आम नागरिकों का जीवन आसान हुआ है।

रोमांचक यात्रा

वर्ष 1956, वर्ष 2000 और वर्तमान समय के मध्यप्रदेश में बड़ा परिवर्तन साफ दिखता है। शहरों और गांवों के बुनियादी ढांचे में परिवर्तन हुआ है । सूचना क्रांति ने जीवन के हर आयाम को छुआ है। अधोसंरचनात्मक विकास से सामाजिक बदलाव आया है। जनसंख्या की निरंतर वृद्धि और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियां बने रहने के बावजूद विकास की बाधाएं समाप्त हो रही हैं। प्रदेश के गठन के बाद 1961 की जनगणना 323.7 लाख थी। कुछ आधारपभूत आंकड़ों से मध्य प्रदेश की विकास यात्रा और ज्यादा रोमांचक हो जाती है। अर्थव्यवस्था तेजी से बढी है । वर्ष 2003 में जीडीपी 71,594 करोड़ थी जो अब बढ़कर 13,63,327 करोड़ हो गई है। प्रति व्यक्ति आय 1956 में मात्र 261 रूपए, 2003 में 11,718 करोड़ और आज 1,42,565 करोड़ है।

कृषि के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव हुआ है। इसका कारण सिंचाई और बिजली की भरपूर उपलब्धता है। किसान-मित्र नीतियों से खेती आधारित अर्थव्यवस्था की नींव मजबूत हुई। खेती से जुड़े अन्य क्षेत्रों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा। अब सामान्य खेती से आगे बढ़कर कृषि उद्यमिता पर मध्यप्रदेश ने कदम रख रहा है। कृषि क्षेत्र में निर्यात बढ़ा है। मध्यप्रदेश का गेहूं, चावल, दालें अंतरराष्ट्रीय बाजार में जा रही हैं। एक अन्य क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन हुआ है वह राजस्व संग्रह का क्षेत्र। सरकार और व्यापारिक समुदाय के परस्पर सहयोग एवं विश्वास के रिश्तों से स्वप्रेरित राजस्व अदा करने की संस्कृति को बढ़ावा मिला है। मध्यप्रदेश जीएसटी संग्रहण में देश में पहले पांच राज्यों में है। यह राजस्व सरप्लस राज्य बन गया है। बिजली संकट से जूझने के बाद मध्य प्रदेश पावर सरप्लस राज्य है। नवकरणीय ऊर्जा जैसे नए क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रदेश के विभिन्न भूभाग में समान रूप से औद्योगिक निवेश एवं विकास करने के उद्देश्य को लेकर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने रीजनल इंडस्ट्री कांक्लेव की श्रृंखला की शुरुआत की। अब तक उज्जैन, जबलपुर, ग्वालियर, सागर और रीवा में हो चुकी है। इसके साथ ही निवेश आमंत्रण के लिए मुंबई ,बेंगलुरु, कोयंबटूर, कोलकाता में रोड शो किए। फलस्वरूप मध्यप्रदेश को 2,76,000 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले। इसे प्रदेश में तीन लाख 98 हजार लोगों को रोजगार मिलने की संभावना बनेगी। मध्यप्रदेश की मजबूत होती आर्थिक अधोसरंचना के साथ अब मध्यप्रदेश अपनी विकास की गति को और तेज करने के लिए तैयार है। सभी राज्यों और विदेशों से संपर्क निरंतर मजबूत हो रहा है। हाल में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा रीवा एयरपोर्ट के शुभारंभ के साथ प्रदेश में छह एयरपोर्ट हो गए हैं। मध्यप्रदेश के गठन के समय सड़कों की लंबाई 28.1 हजार किलोमीटर थी। आज 71,379 किमी हो चुकी है। रेल रूट 5188 किमी हो गया है।

चिकित्सा सेवाओं का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। राज्य के गठन के समय एलोपैथिक चिकित्सालय और औषधालयों की संख्या 556 तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की संख्या मात्र 108 थी। वर्ष 1956 में हॉस्पिटल में बेड की संख्या 10.2 हजार थी जो अब बढकर 45,000 से ज्यादा हो गई। .वर्ष 1956 में प्राथमिक शालाओं की संख्या 22.8 हजार थी जो अब बढ़कर 79,215 हो गई है। माध्यमिक शालाओं की संख्या 1.6 हजार से बढ़कर 30,184 हो गई है। उच्चतर माध्यमिक शालाओं की संख्या 414 से बढ़कर 4,868 हो गई है। वर्ष 1956 में प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोक्ता 5 किलोवाट घंटे था। अब पावर सरप्लस राज्य है। आज प्रति व्यक्ति प्रति घंटे है। कपड़ा सीमेंट और शक्कर मुख्य रूप से कारखाने थे। आज विभिन्न प्रकार के उद्योगों का विस्तार हुआ है जिनमें खाद्य प्रसंस्करण और सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं आधार आईटी उद्योग शामिल है। इन इन आधारभूत आंकड़ों से मध्य प्रदेश की एक रोमांचक विकास यात्रा की झलक मिलती है। आज जब भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने जा रहा है तब मध्य प्रदेश भी अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने में खुद को तैयार कर रहा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

मुझ पर सवार होजा, हे माँ लक्ष्मी !

केदार शर्मा
लेखक व्यंग्यकार हैं।

शास्त्रों में अष्टलक्ष्मी का उल्लेख आता है। योगलक्ष्मी और भोगलक्ष्मी इनमें प्रमुख है। जहां योगलक्ष्मी का वाहन जहां हंस है वहीं धनलक्ष्मी का वाहन उल्लू बताया जाता है। माता लक्ष्मी का वाहन उल्लू ही क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए आइए स्वयं उलूक से ही मिलते हैं।

हे लक्ष्मी माता के वाहन हे उलूक देव !,लक्ष्मीजी का प्रिय वाहन बनने के लिए आपका ही चयन क्यों किया गया ? उलूक ने समझाया –''देखिये,शास्त्रों में अधिकतर बातें गूढ़ार्थ में कही गई है। माता धनलक्ष्मी का वाहन वास्तविक उल्लू पक्षी न होकर उल्लू जैसी प्रवृति वाले लोग है।

उल्लू ने अपना प्रवचन जारी रखा-''अब इस कमरतोड़ मंहगाई में किसको किसी पागल कुत्ते ने काटा है जो धनलक्ष्मी को अपने ऊपर सवार नहीं होने देगा ? कौन अकूत धन का वरदान नहीं पाना चाहेगा ? धनलक्ष्मी से धन का वरदान पाने के लिए इंसान को हम उल्लूओं जेसी योग्यता अर्जित करनी ही पड़ती है। जो लक्ष्मी के लिए निष्ठापूर्वक पूरी तरह से उल्लू प्रवृत्ति को अंगीकृत कर लेता है, उसकी इस योग्यता से अभिभूत हो, माँ लक्ष्मी ऐसे व्यक्ति के मन,वचन,कर्म और व्यवहार में ही नहीं,उसके रोम-रोम पर सवार हो जाती है।

जिस शख्स के मनोमस्तिष्क पर धन,एश्वर्य और वैभव की देवी सवारी कर रही हो भला उसे किस बात की कमी ? उसे तो रात भी दिन जैसी लगती है। अर्थ और काम इन दोनों के पीछे वह नहा-धोकर ही पड़ जाता है। धर्म और मोक्ष जैसी धुने उसके दिमागी सिस्टम से डिलीट हो जाती है। वह रात-दिन इन मंत्रों का जाप का करने लगता है-'' या देवी सर्वभूतेषु धन रूपेण संस्थिता, । भज कलदारम मूढ़मते...।, बाप बड़ा न भैया,सबसे बड़ा रुपया..। पैसा ये पैसा....।'' उल्लू अपना एक अनुभव शेयर किया कि एक बार एक बंदे को धनलक्ष्मी मैया को अपने ऊपर सवार करने की ऐसी ही धुन सवार हुई कि सिवाय धन के और कोई धुन सुनाई पड़ना ही बन्द हो गई । अखबार की एजेंसी लेकर सुबह चार बजे उठकर अखबार बँटवाने लगे। दिन में दफ्तर जाकर क्लर्क का काम करते। कुछ घरेलू सामानों की एजेंसी लेकर दफ्तर में ग्राहक बनाने का काम भी चल पड़ा। पत्नि और पुत्र-पुत्रियों के नाम बीमा और डाकघर की एजेंसी पहले से ही थी। चड्डी बनियान की एजेंसी लेकर ऑफिस से आने के बाद दुकान-दुकान सप्लाई करने लगे सो अलग। सड़क की और दरवाजा निकालकर एक कमरे को उन्होंने दुकान में बदल डाला। उल्लू ने हैरानी जताई कि किसी शायर ने यह कैसे कह दिया कि'' बरबाद-ए-गुलिस्तां करने को जब एक ही उल्लू काफी था,अब 'हर शाख पर उल्लू बैठा है, अंजाम-ए-गुलिस्ता क्या होगा?'' अब जरा सोचो,हम उल्लुओं से भला गुलिस्ता बरबाद होता है? पर धीरे-धीरे हकीकत लोगों के सामने आ गई है कि आजादी के इतने सालों के बाद भी उल्लुओं के कई 'शाखाओं' पर पदासीन होने के बावजूद भी हमारा 'गुलिस्तां' बरबाद नहीं आबाद ही हुआ है । चाहे हिंसा और वासना से युक्त फिल्में बनाने वाले हों, या गेंद-बल्ले से कम परंतु बेशुमार दौलत से खेलने और खिलाने वाले क्रिकेट के कारोबारी हों ,खेलों की राजनीति हो,या राजनीति के खेल किस जगह उल्लू प्रवृति के लोगों की कमी है ? परीक्षाओं के पेपर की सेटिंग हो या रेव पार्टी, हर जगह हम 'गुलिस्तां'की भरपूर शोभा बढ़ा रहे हैं, या यूँ कहें कि 'गुलिस्तां' की छत्र-छाया में फल-फूल रहें हैं।'' उल्लू जैसी प्रवृति लाने के लिए हम उल्लूओं जैसी दूरदृष्टि चाहिए। शिक्षा के प्रसार के साथ ऐसे दूरद्रष्टाओं की खेप बढ़ती ही जा रही है जो घने अंधकार जैसी परिस्थितिथियों में भी स्पष्ट रूप से सब कुछ भाँप लेते हैं कि किन बैंको से कब और किस तरह से कर्जा लिया जा सकता है । कैसे उसे चुकाने से बचा जा सकता है। अधिक दबाव पड़ने पर कैसे भागा जा सकता है। कैसे क्रेडिट सोसाइटी कम्पनी खोलकर लोगों का धन खींचा जा सकता है,और कैसे रातों- रात समेटकर चम्पत हुआ जा सकता है। कैसे प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक कर लाखों रुपए खींचे जा सकते हैं, जिनके मगज में धनलक्ष्मी मैया सवार हो उनसे अधिक गहन दृष्टि और भला ओर किस में होती होगी ? पर धीरे-धीरे इस प्रजाति पर खतरा मंडराने लगा है जो खतरा हम उल्लुओं को शिकारी से है वही खतरा इन 'उल्लूओं' को सूचना के अधिकार,ई.डी. और सी.बी. आई. जैसी संस्थाओं से होने लगा है।

सबने उलूकराज के प्रवचनों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा- हे पक्षीराज! आप द्वारा दिए ज्ञान से हम उल्लू प्रवृति को आत्मसात करके माता लक्ष्मी से प्रार्थना करेंगे कि मुझ पर सवार होजा हे माँ लक्ष्मी !

दीपावली उत्सव

हिमालयन सिद्ध अक्षर

(आध्यात्मिक लेखक)

ऊर्जा जागरण का आध्यात्मिक पर्व भी है दीपावली

'दीपावली' शब्द संस्कृत से आया है, जहां 'दीप' का अर्थ है 'प्रकाश' और 'अवली' का अर्थ है 'पंक्ति' जिसका शाब्दिक अर्थ है 'रोशनी की पंक्ति।' यह पर्व हिंदू माह, कार्तिक की अमावस्या को मनाया जाता है। पर्व का उत्सव आम तौर पर पांच दिनों तक चलता है, प्रत्येक दिन का अपना महत्व, अनुष्ठान और रीति-रिवाज होते हैं। तीसरे दिन को मुख्य दिवाली उत्सव मनाया जाता है।

वनवास के 14 साल के बाद, भगवान राम, माता सीता और भाई लक्ष्मण अपने राज्य अयोध्या लौटे थे। लंका विजय के बाद श्री राम अयोध्या लौटे। अयोध्या के लोगों ने भगवान राम के मार्ग को रोशन करने के लिए मिट्टी के दीयों की पंक्तियाँ जलाकर उनका स्वागत किया। यह विजयी वापसी अंधेरे पर प्रकाश की, बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। भगवान राम की वापसी की खुशी में ढोल और शंख बजाए गए और अयोध्यावासी सड़कों पर खुशी से नृत्य करने लगे। हिमालयी परंपरा और ज्ञान के अनुसार लोगों को ज्ञान प्राप्त करते समय यही खुशी अपने दिल में रखनी चाहिए। अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए योग प्रथाओं को अपनाना चाहिए।

भारत के अन्य हिस्सों में, यह त्योहार विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं की याद दिलाता है। दक्षिण भारतीय इसे उस दिन के रूप में मनाते हैं, जिस दिन भगवान कृष्ण ने राक्षस नरकासुर को हराया था। जबकि, जैन समुदाय इसे भगवान महावीर ने निर्वाण दिवस के रूप में मनाता है। सिखों के लिए दीपावली बंदी-छोड़ दिवस के साथ मेल खाती है, यह पर्व मुगल सम्राट जहांगीर द्वारा कारावास से गुरु हरगोबिंद जी की रिहाई का प्रतीक है।

पांच दिन की पर्व श्रृंखला

त्योहार पांच दिनों तक चलता है, प्रत्येक का अपना महत्व और रीति-रिवाज हैं। धनतेरस का पहला दिन धन और समृद्धि को समर्पित है। लोग अपने घरों की सफाई करते हैं और सोना, चांदी या बर्तन खरीदते हैं क्योंकि इसे शुभ माना जाता है। नरक चतुर्दशी को छोटी दिवाली के रूप में मनाया जाता है। इस दिन नरकासुर पर भगवान कृष्ण की जीत का जश्न मनाया जाता है। सुबह की पारंपरिक रस्में और तेल स्नान आम प्रथाएं हैं। दीपावली का मुख्य दिन धन और समृद्धि की देवी देवी लक्ष्मी की पूजा पर केंद्रित है। घरों को रंगोली, दीयों और फूलों से सजाया जाता है। गोवर्धन पूजा का दिन भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाकर भगवान इंद्र के प्रकोप से गोकुल के लोगों की रक्षा करने का जश्न मनाया जाता है। पांचवा दिन भाई दूज का होता है। यह त्यौहार भाई-बहन के बंधन के उत्सव के साथ समाप्त होता है।

पर्व की सांस्कृतिक प्रथाएं

घरों को रंगोली से सजाया जाता है। लोग दीये जलाते हैं। परिवार में उपहारों और मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं। नए कपड़े पहने जाते हैं और समृद्धि के लिए देवी लक्ष्मी से प्रार्थना की जाती है। आतिशबाजी का प्रदर्शन बुरी आत्माओं को दूर भगाने का प्रतीक है। आज दीपावली उत्सव में पारंपरिक रीति-रिवाजों को समकालीन प्रथाओं के साथ मिश्रित किया गया है। त्योहार से कुछ हफ्ते पहले घरों की पूरी तरह से सफाई और सजावट की जाती है। रंगीन पाउडर से बने विस्तृत रंगोली डिज़ाइन, प्रवेश द्वारों को सजाते हैं, जबकि बिजली की रोशनी के तार शहरों को जगमग प्रदेश में बदल देते हैं। यह त्योहार एक प्रमुख सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम के रूप में विकसित हुआ है। पारिवारिक समारोहों में पारंपरिक मिठाइयों और स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाते हैं। उपहारों का आदान-प्रदान होता है। बच्चे उत्सुकता से आतिशबाजी का इंतजार करते हैं। शहरी क्षेत्रों में लोग सांस्कृतिक-कार्यक्रम व सामूहिक प्रार्थना भी शामिल होते हैं।

पूरी दुनिया में उजास पर्व

जैसे-जैसे भारतीय समुदाय विश्व स्तर पर फैला है, दीपावली को अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिल गई है। दुनिया के प्रमुख शहर अब न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर से लेकर लंदन के ट्राफलगर स्क्वायर तक दीपावली पे सार्वजनिक समारोह आयोजित करते हैं। इस वैश्वीकरण ने उत्सवों को स्थानीय संदर्भों में ढाल विश्व बिरादरी को उत्सव की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से रूबरू कराया है।

दीपावली का आध्यात्मिक महत्व

प्रकाश ज्ञान और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है इसलिए दीवाली पर हम इसे अपने घरों में दीपक जलाकर मनाते हैं। अंधकार प्रकाश की अनुपस्थिति है और अंधकार अज्ञानता और नकारात्मक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। यह त्योहार आंतरिक रोशनी और आत्म-प्रतिबिंब को प्रोत्साहित करता है। अपने बाहरी उत्सवों से परे, दीपावली का गहरा आध्यात्मिक महत्व है। दीपक जलाना आंतरिक प्रकाश का प्रतीक है जो आध्यात्मिक अंधकार से बचाता है, जो अज्ञान पर ज्ञान, बुराई पर अच्छाई और निराशा पर आशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह रूपक पहलू इस त्योहार को सांस्कृतिक और धार्मिक सीमाओं के पार प्रासंगिक बनाता है।

हिमालयीन परंपरा

हिमालय का दिव्य ज्ञान सलाह देता है कि जब हम अपने घरों में दीपक जलाते हैं तो हमें अपने प्रियजनों के घरों में भी दीपक जलाना चाहिए। यह दीपावली के पवित्र त्योहार के दौरान प्यार और दूसरों की देखभाल की भावना को औरों के साथ बांटने की भावना का प्रतिनिधित्व करता है। इससे सकारात्मकता का निर्माण होता है और नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। इस जीवन का केवल एक ही उद्देश्य है और वह है सद्भाव और आनंद। हम सभी को इन गुणों को अपने जीवन में आमंत्रित करने और विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।सभी को हिमालयी परंपरा के अनुसार आनंदमय जीवन का संदेश फैलाना चाहिए। प्रकाश, ज्ञान और अच्छाई के उत्सव के रूप में, दीपावली लाखों लोगों के जीवन को रोशन कर रही है। पीढ़ियों और भौगोलिक सीमाओं के पार एकता, खुशी और सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा दे रही है।

नरक चतुर्दशी (30 अक्टूबर) पर विशेष

सुरेश सौरभ

(कहानी)

मन के दिये जल उठे

चारों ओर रोशनी ही रोशनी से जगमग-जगमग पूरा शहर हो रहा था। दिवाली की धूम-धड़ाके में खुशियों का शोरगुल हर ओर समाया हुआ था। ऐसी खुशियों में भी इंस्पेक्टर शिवानी थाने में उदास बैठी थी। तभी उसके आला अधिकारी महेश देवा आए, उन्होंने शिवानी से कहा-'अरे! आज तुम इतनी उदास क्यों बैठी हो?' शिवानी बेहद मायूसी से बोली-'कुछ नहीं सर, बस घर की, बच्चों की याद आ रही थी।'

महेश-'अरे! हम लोगों को तो कभी-कभी घर का सुख नसीब होता रहता है, पर तुम्हें आज, मैं ऐसे लोगों से मिलाना चाहता हूँ, जिनके न घर है, न द्वार, न उनका कोई अपना सगा-सम्बंधी, बस यूं समझो वह ईश्वर के सहारे जिये जा रहे हैं, किसी तरह।'

मतलब।' शिवानी थोड़ा हैरत से बोली।

'मतलब यही कि आज मैं तुमको वृद्धों और बच्चों के अनाथ आश्रम ले चलूंगा, चलोगी न।'

'जी सर! बिल्कुल।' किसी अज्ञात खुशी से वह थोड़ा चहकी। अनाथ आश्रम के लिए तमाम खिलौने, मिठाइयां कपड़े आदि वह आला अधिकारी, बाजार से पहले लेकर आए थे, जो उनकी गाड़ी में रखे थे। फिर वह अपने कुछ साथियों और शिवानी के साथ अनाथ आश्रम पहुंचे। वहां बुजुर्ग और बच्चे, उन्हें देखकर बहुत खुश हुए। आश्रम में उपहार बांटे गये। बच्चे रंग-बिरंगी खिलौने, फुलझड़ियां, मिठाइयां कपड़े आदि गिफ्ट पाकर बहुत खुश हुए। सभी असहाय वृद्ध भी मिठाइयां,नमकीन कपड़े व अन्य उपहार पाकर खुशी से झूम उठे थे, उनकी खुशी से, उनके आनंद से शिवानी का अंतर्मन का कोना-कोना भीग गया। वह खुशी से झूम उठी और उसकी आंखों में कुछ आंसू छलक आए। तब उसे देख महेश जी विस्मय से बोले-'अरे! शिवानी तुम्हारी आंखों में ये आंसू।'

शिवानी-'जी जी! सर पर यह खुशी के आंसू है। आनंद के आंसू हैं। आज हम घर से दूर तो ज़रूर है, पर मुझे लग रहा, आज घर के साथ पूरा संसार मैंने पा लिया। पूरे संसार की सारी खुशियाँ मैंने पा लीं हैं।'

महेश-'हम-तुम बड़े खुशनसीब हैं कि पुण्य का यह मौका ईश्वर हमें दे रहा है।' शिवानी भावुक कंठ से बोली-'सर आपने मुझे यहां लाकर बड़ा उपकार किया। काश! यह खुशी हर किसी को मिलती, तो कितना अच्छा होता ।

महेश-'यह खुशी नसीब वालों को मिलती है, शिवानी! जो इन्हें देने में सुख है, जो इन अनाथों के सनाथ बनकर दीवाली मनाने में सुख है, वह सुख अन्यत्र दुनिया में और कहाँ?'

'सही कहा सर! मुझे तो लग रहा मैंने किसी पवित्र तीर्थ पर आकर जैसे अनंत पुण्य कमा लिये हों।अनाथ आश्रम में वृद्धों और बच्चों की आंखों में खुशियों के अनेकानेक दीपक जगर-मगर जल रहे थे, उन्हें देख शिवानी की आत्मा को परमानंद प्राप्त हो रहा था। बाहर खड़ी पुलिस की गाड़ी भी, आज सूकून और शांति का कुछ अनुभव कर थी।

दीपावली विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

अँधेरा और उजाला

अंधेरा और उजाला दोनों सूर्य की देन हैं। सूरज से अलग होकर उसका एक टुकड़ा धीरे-धीरे ठंडा होकर धरती बना। अपनी धुरी पर घूमती हुई यह पृथ्वी सूर्य के भी चक्कर लगा रही है। घूमती धरती का जो हिस्सा सूरज के सामने होता है वहाँ उजाला और शेष भाग में अंधेरा होता है। सूर्य, पृथ्वी और दूसरे ग्रहों की भौगोलिक स्थिति से मौसम और वातावरण बनते हैं। प्रकृति ने अंधेरे और उजाले में धरती पर पड़नेवाले प्रभाव में थोड़ी भिन्नता रखी। मनुष्य और कई जीव रात घिरते ही आलस्य में डूबकर निष्क्रिय हो जाते हैं तो अनेक चैतन्य होकर भोजन की तलाश में निकल पड़ते हैं। रात में विचरण करनेवालों को निशाचर कहते हैं। जैसे प्रकाश में सबकुछ साफ-साफ दिखाई देता है वैसे ही जानकारी होने पर चीजों को लेकर समझ स्पष्ट हो जाती हैं इसलिए ज्ञान को प्रकाश की उपमा दी गई। प्रकाश की अनुपस्थिति अंधेरा है, इसी तरह ज्ञान न होना अज्ञान है। समय ने मानवों को सिखाया कि ज्ञान ही असली ताकत होती है। ज्ञान का भंडारण बुद्धि में होता है। यूँ तो ज्ञान की थोड़ी बहुत मात्रा जानवरों में भी होती है परंतु इंसान का ज्ञान असीम होता है। इसलिए शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक शक्ति श्रेष्ठ होती है। शारीरिक बल से किसी को काबू में ले सकते हैं परंतु विवेक से ताकतवर को भी अपना बनाया जा सकता है।

मनुष्य होश संभालते ही अपनी बुद्धि का भरपूर उपयोग कर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा है। अज्ञानता नकारात्मकता है, तमस भी नकारात्मक है। सुख का पर्याय अनुकूलता है। इंसान जितना बुद्धिमान होता जाता है, चुनौतियाँ उतनी बड़ी होती जाती हैं। इसलिए अज्ञानता अर्थात् अंधेरे से संघर्ष शाश्वत है। दीपावली का त्योहार भी अमावस्या की अंधेरी रात को जगमगा देने का साहस है। लक्ष्मी जी का स्वागत अनगिनत दीपों की माला से अंदर-बाहर के तमस को दूर भगाकर सकारात्मकता का उजास फैलाना है। दीपावली का विशेष त्योहार पाँच दिन चलता है।

धनतेरस को स्वास्थ्य के देवता धन्वंतरि की आराधना शारीरिक एवं मानसिक देखभाल करना सिखाती है। रूप चौदस के दिन व्यक्तित्व के निखार की अहमियत बताने के बाद अमावस्या को सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य और सफलता की देवी लक्ष्मी जी की अगवानी के लिए ज्ञान दीपक से दरिद्रता के मूल नकारात्मक अंधेरे को दूर किया जाता है। फिर गोवर्धन की पूजा जीवनयापन की आवश्यकताओं की देखभाल और भाईदूज पारिवारिक, सामाजिक बंधनों की महत्ता का संदेश देते हैं। कार्तिक मास की अमावस्या को अज्ञानता से संघर्ष का प्रतीक बनाकर नए वर्ष की शुरुआत की जाती है।

ज्ञान-अज्ञान या विवेक-अविवेक के बीच का द्वंद्व दिलचस्प और ज़बरदस्त होता है। सभ्यता के विकास के बावजूद कोई एक पक्ष दूसरे प्रतिद्वंद्वी को पूरी तरह से जीत नहीं पाया है। दुनिया के हर हिस्से में अच्छाई और बुराई को लेकर फिलॉसफी के ग्रंथ भरे पड़े हैं। हिंदू धर्म में माना जाता है कि ईश्वर ने निगेटिव और पॉजिटिव दोनों तरह की माया के प्रभाव वाली सृष्टि को बनाया है। भगवान ने हमें विवेक प्रदान किया है जो हर समय इंसान का मार्गदर्शन करता है। आवश्यकता इस विवेक के सही तरीके से इस्तेमाल करने की है। अंतश्चेतना में विद्यमान बुद्धि और विवेक को निरंतर क्रियाशील बनाए रखने के लिए पतंजलि सूत्र जैसे ग्रंथ लिखे गए। मानव जीवन के उद्देश्य को परिभाषित करने के लिए श्रुतियों, स्मृतियों, शास्त्रों की रचना हुई। हजारों सालों के प्रयासों के बाद भी निष्कलंक पूर्णता की उपलब्धि दूर की कौड़ी बनी हुई है। संभवत: इसीलिए वेद 'नेति' यानी यह अंत नहीं है का उद्घोष करते हुए 'चरैवेति' अर्थात् चलते रहो का उपदेश देते हैं।

इस दीवाली एक ज्ञान का दीप जलाएँ और नकारात्मक अंधकार से मुक्त हों। श्रीराम चरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी समझाते हैं कि अपने भीतर-बाहर प्रज्ञा के उजाले को फैलाने के लिए, ज्ञान, मर्यादा एवं सकारात्मकता के पूर्ण अवतार श्रीराम के नाम के मणि-दीप को शरीर की देहरी रूपी जिह्वा पर धारण कर जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करें। राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार। तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजियार॥

दीप पर्व विशेष

विनोद दुबे

सिंगापुर में दीपावली पर पूजे जाते हैं श्रीकृष्ण और लक्ष्मी

भारत के मेरे दोस्त यार अक्सर पूछते हैं कि सिंगापुर में दिवाली मनाई भी जाती है नहीं, और अगर हाँ, तो कैसे? उन सारे सवालों का जवाब देते मैंने एक लेख लिखा है। तो चलिए, अपनी कुर्सी की पेटी बांध लीजिए, क्योंकि अगले कुछ मिनटों मैं आपको सिंगापुर में दीपावली दिखाकर लाता हूँ ।

जहाँ सालाना सिर्फ 11 राष्ट्रीय छुट्टियां होती हैं, आप जान सकते हैं कि सिंगापुर सरकार छुट्टियों के मामले में कितनी सजग है। लेकर जब आप देखते हैं कि उनमे से एक छुट्टी दीपावली की भी होती है, तो अंदाज़ा लगता है यहाँ दीपावली का क्या महत्व है। और यही आज कल की बात नहीं, बल्कि दीपावली को 1929 से राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया है, जब सिंगापुर ब्रिटिश कॉलोनी हुआ करती थी।

अब आप सोच रहे होंगे कि मैं दिवाली की बजाय दीपावली शब्द का बार -बार प्रयोग क्यों कर रहा हूँ। इसलिए क्यूंकि लगभग 60 लाख की जनसँख्या वाले सिंगापुर में लगभग 6 लाख भारतियों में लगभग 3 लाख तमिल हैं। कहने का लब्बोलुआब यह है कि सिंगापुर में भारतीयता का पहली छवि हमारी तमिल जनसँख्या है। इसलिए यहाँ के लोगों के उच्चारण में राम रामा हैं, रावण रावणा और दिवाली दीपवाली है। दीपावली मनाने के तरीके में भी साफ़ अंतर नज़ारा आता है। दक्षिण भारतीय मित्र सुबह -सुबह नरकासुर वध करने वाले कृष्णा की पूजा करते हैं जबकि उत्तर भारतीय शाम को लक्ष्मी की पूजा करते हैं। वैसे भी इस परदेस में क्या उत्तर क्या दक्षिण ? उत्तर भारतीयों ने ओणम जान लिया, वर लक्ष्मी की पूजा देख लिया और दक्षिण भारतियों ने होली के रंग देख लिए और छठ की पूजा को समझ लिया।

अब बात करते हैं सिंगापुर के सौंदर्य प्रेम और दीपावली की सजावट पर। चाहे चीनी नव वर्ष हो या दीपावली, हर बड़े त्यौहार के दौरान यह पूरा देश उसी थीम में नहाया रहता है। चांगी एयरपोर्ट से लेकर मेट्रो ट्रैन तक, बड़े-बड़े मॉल्स से लेकर सडकों तक आप चारों तरफ दिवाली की खूबसूरत सजावट देखेंगे। सिंगापुर के 'लिटिल इंडिया' क्षेत्र में दीपावली के दौरान ऐसा लगता है जैसे आप भारत के गली मुहल्लों से गुजर रहे हों। वही रंगीन दियों से सजी दुकानें और मिठाइयों की खुशबू से भरी हवा।

दिवाली के बादल, फिर छा रहे हैं,
गुजरे ज़माने, याद आ रहे हैं,
पटाखों का शोर, बच्चों के हल्ले,
दिवाली के रंग में, यूँ रंगे थे मोहल्ले,
कहीं बिकती थी बर्फी, तो कहीं रेवड़ी और गट्टे,
जलेबी अमिरिती पर, भाई बहनों के झपट्टे,
दुकानों पर लटके, बर्तनों का संसार था,
मिठाईयों की खुशबू से, गमकता बाजार था,

योजनाबद्ध तरीके से काम सिंगापुर के डीएनए में है। यह दिवाली की सजावट भी बेतरतीब नहीं बल्कि सुनियोजित तरीके से की जाती है। इसके पीछे है LISA, यानी Little India Shopkeepers and Heritage Association, जो हर साल दीपावली के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करता है । इस साल भी 14 सितम्बर को सीनियर मंत्री तेओ ने दिवाली की तैयारियों का उद्घाटन किया और बटन दबाया तो रंग-बिरंगी रोशनी सिंगापुर के आसमान में ऐसे फ़ैल गयी , मानो आसमान भी दीपावली का जश्न मना रहा हो। हम सब चाहते हैं कि हमारी परंपराएँ सिर्फ किताबों तक सीमित न रहें, बल्कि हमारे बच्चों और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचें। सिंगापुर सरकार की इस 'संस्कृति को बचाने की जिजीविषा' की जितनी तारीफ की जाए, उतनी कम है।

सिंगापुर के दिवाली के इस उत्सव में छोटा सा ट्विस्ट है- सिंगापुर में पटाखे नहीं चलाए जाते। यहां केवल फुलझड़ियां चलाने की अनुमति है। वह भी eco फ्रेंडली। सिंगापुर में जोश में होश नहीं खो सकते, सरकार इस अनुशासन का ध्यान भी बराबर रखती है। इसलिए आप निम्नलिखित पंक्तियों को तो भूल ही जाईये-

वो बोतल की रॉकेट, वो छत पर फुलझड़ियां,
सुतली बम के धमाके, पटाखों की लड़ियाँ,

अब बात करते हैं एक और अनोखी परंपरा की, जो सिंगापुर के सबसे पुराने हिन्दू मंदिर मरियम्मन मंदिर में देखने को मिलती है। वहां कोयले की जलती आग पर चलने का प्रचलन है। आग पर चलना, जिसे तमिल में 'थीमथि' कहते हैं, कई वर्षों पुरानी तमिल परंपरा है जिसे महाभारत के अंत में द्रौपदी के प्रण के पूरा हो जाने का उत्सव भी कहते है। आग पर चलने के लिए तमिल अनुयायी कई महीनों तक संयमित जीवन जीकर स्वयं को इसके तैयार करते हैं और उनका पंजीकरण किया जाता है। सही और गलत से परे, जलते अंगारे पर चलता इंसान, ईश्वर को अपने साहस , त्याग और जिजीविषा का परिचय तो दे ही देता है ।

अब अंत में, अपनी दुखती रग पर हाथ रखते हुए मैं शॉपिंग की बात करना चाहूंगा। वैसे भी जो पत्नी से करे प्यार वह दीपावली की शॉपिंग से कैसे करे इंकार। मुस्तफा सेंटर का नाम तो आपने सुना ही होगा, जहां कहते हैं कि इंसान छोड़कर बाकी सब कुछ मिल जाता है । दीपावली के मौसम में पर यहाँ धनतेरस के आस पास सोने के गहने, मिठाइयाँ, दीये, इन सबके शॉपिंग के लिए एक बड़ी भीड़ नज़र आती है। पत्नी के त्यौहार के समय मुस्तफा गया और घंटों की मशक्कत के बाद सामान लेकर निकलता पुरुष यूँ खुश नज़र आता मानों मुस्तफा नामक समंदर से सीप का मोती लेकर लौट रहा हूँ ।

कुल मिलकर सिंगापुर की दीपावली में राष्ट्रिय अवकास, दक्षिण भारतीयता का पुट, सजावट और शॉपिंग है। यहाँ परंपरा, आधुनिकता और अनुशासन का अनोखा मेल है । हम सबको यहां एक मौका मिलता है अपनी संस्कृति को संजोने का, थोड़ी मिठाई से वजन बढ़ाने का और फुलझड़ियों से जिंदगी रंगीन करने का। तो यह रही सिंगापुर की बात। कहते हैं कि वह NRI भी क्या NRI जिसके साहित्य में भारत में गुजारे वक्त का नोस्टाल्जिया न हो। तो अंत करने से पहले कुछ पंक्तियाँ उन यादों के नाम जिसे हम अपनी जन्मभूमि पर छोड़ आये हैं -

यादों का ये लम्बा रेला ,
स्टेशन जैसे छूट रहा है,
वक्त की रस्साकसी में,
रेशा - रेशा टूट रहा है,
यहाँ भी दिवाली है ,
लोगों के मेले हैं ,
पार्टियों का शोर है,
हम फिर भी अकेले हैं,
जितना भरा है बाहर ,
भीतर उतना खाली है,
अपनों से दूर परदेस में,
ये एक और दिवाली है...

दीपोत्सव पर्व को लेकर लोगों की तैयारियां पूरी, आंगन में सजने लगी आकर्षक रंगोली

संजय द्विवेदी, बैतूल। धन की देवी मां लक्ष्मी का त्यौहार दीपोत्सव नागरिकों ने हर्षोल्लास से मनाने की पूरी तैयारी कर ली है। नागरिकों द्वारा मां लक्ष्मी के स्वागत के लिए अपने-अपने घर प्रतिष्ठानों का रंगरोगन कर आकर्षक रूप से सजा लिया गया है। नागरिकों को इंतजार है तो बस मां लक्ष्मी की कृपा का, ताकि उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो सके। मां लक्ष्मी के स्वागत में लोगों ने अपने-अपने घर और आंगन को जहां सजा-धजा रखा है, वहीं आकर्षक रांगोलियों भी उकेरी गई है। आज शाम को मां लक्ष्मी पूजन विधि-विधान से पूजन उपरांत प्रत्येक घर और आंगन में खुशियों के दीप जलाएं जाएंगे। उसके बाद बड़े बुजुर्गों समेत बच्चों द्वारा आकर्षक रंगीन आतिशबाजी का लुफ्त देर रात्रि तक उठाया जाएगा। बुधवार से ही बाजार खील-बताशे, मोरपंख, झाड़ू सहित कमल एवं गेंदे के फूलों की दुकानों से बाजार में सज चुका है। दीपावली पर्व का उत्साह लोगों में इस बार काफी अलग है। वैसे तो धनतेरस से ही पांच दिवसीय दीपोत्सव की शुरूआत हो गई है, लेकिन दीपावली पर पटाखे फोड़ने की ललक बच्चों को सुबह से उत्साहित करती है। दीपावली को लेकर वाट्सएप, फेसबुक, इस्ट्राग्राम, व्हाट्सअप सहित अन्य एप के माध्यम से दीपावली की शुभकामनाएं देने का सिलसिला शुरु हो गया। दीपावली पर्व पर माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने घरों को बंधनवारों से सजाया जा रहा है।

बाजारों में रही भीड़, जमकर हुई खरीदी- दीपावली त्यौहार के एक दिन पूर्व शहर के गंज और कोठीबाजार में नागरिकों की खासी चहल-पहल बनी रही। मां लक्ष्मी के पूजन अर्चना में किसी भी प्रकार की कोई कमी न

रह जाए, इसको दृष्टिगत रखते हुए नागरिकों द्वारा जमकर फूल-पान समेत पूजन की अन्य सामग्रियों की खरीदी की गई। दुकानदारों द्वारा दीपावली को लेकर पूरी तैयारी कर ली है। इधर सराफा, ऑटोमोबाईल सेक्टर, इलेक्ट्रानिक्स सामानों की जमकर खरीददारी हुई है। जिला मुख्यालय पर खरीददारी करने के लिए बैतूल से लगे आसपास के गांव के लोग भी बड़ी संख्या में पहुंचे। बाजार में मिट्टी से बने दीये बड़ी संख्या में बेचने के लिए लाए गए। इस बार लोगों ने मिट्टी से बने दीये की सबसे ज्यादा खरीददारी की। आर्टिफिशियल दीपों से किनारा कर लिया।

जगमग हुए शहर के मंदिर- शहर के मंदिरों में भी दीपावली के त्यौहार के मद्देनजर आकर्षक रंगाई-पुताई कर विद्युत रोशनी की गई है। इसके अलावा मोहल्ले एवं कालोनियों में स्थित देवी-देवताओं के मंदिरों में भी नागरिकों द्वारा सजावट में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज दीपावली के त्यौहार पर नागरिकों द्वारा मंदिरों में दीपक जलाए जाएंगे, जिससे सभी मंदिर जगमग हो उठेंगे। बुधवार को भी ऑटो मोबाईल सेक्टर में दो पहिया वाहनों की जमकर खरीददारी हुई है। गंज स्थित आदित्य होण्डा शोरूम और खण्डेलवाल हीरो शोरूम में वाहनों की खरीददारी करने के लिए ग्राहकों की भीड़ लगी रही।

मिठाईयों की सजी दुकानें- शहर में दीपावली के त्यौहार को लेकर होटल संचालकों द्वारा अपने-अपने प्रतिष्ठान के समक्ष सडक़ तक रंग-बिरंगी मिठाईयों की दुकान सजा रखी है। मिठाईयों की इन दुकानों पर 300 रूपए किलो से लेकर 1500 रूपए किलों तक मिठाई बिक रही है। इसके अलावा ड्रायफूड से बनी मिठाईयां भी लोगों की खासी पसंद बनी हुई है, वहीं दीपावली के त्यौहार को लेकर नागरिकों द्वारा अपने-अपने घरों पर सीरिज सहित विद्युत रोशनी कर जहां आकर्षक सजावट की गई है। महिलाओं एवं युवतियों ने भी घर के आंगन में आकर्षक रांगोली उकेरी है। मां लक्ष्मी के त्यौहार पर घर और आंगनों की आकर्षक सजावट की गई है जो कि देखते ही बन रही है।

आतिशबाजी से रंगबिरंगा होगा आसमान- आज गुरूवार की रात आतिशबाजी और पटाखों से रंगबिरंगी हो जाएगी। इस दिन पूरे जिले में हजारों की संख्या में लोग आतिशबाजी कर अपनी खुशी का इजहार करेंगे। इससे पहले श्री गणेश एवं मां लक्ष्मी का विधि विधान से पूजन कर भोग लगाया जाएगा। इसके बाद आतिशबाजी, पटाखे फोडऩे का सिलसिला शाम से लेकर देर रात तक जारी रहेगा। हिन्दू धर्म के सबसे बड़े दीपावली पर्व को लेकर खासा उत्साह है। इस दिन खील-बताशे, मिठाई का प्रसाद बांटा जाता है।

दिवाली पर बच्चों को बांटी खुशियाँ

देवास। परफेक्ट हेल्थ केयर रिहेबिलीटेशन सेंटर और प्रभात स्पेशल स्कूल द्वारा बच्चों के बीच दीपावली उत्सव मनाया गया और बच्चों को मिठाई पटाखे और उपहार देकर खुशियाँ बाँटी गई। केंद्र की डॉ जया वर्मा ने बताया कि आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ आशुतोष भटेले और ब्रह्मा कुमारी दीदी प्रेमलता और हेमलता थीं, जिनका स्वागत पूर्व विधायक सुरेंद्र वर्मा तथा पूर्व पार्षद गायत्री वर्मा ने किया। डॉ जया वर्मा द्वारा बच्चों को दिवाली उपहार भेंट किए गए। डॉ जया वर्मा ने बताया कि स्पेशल बच्चों की आक्युपेशनल थेरेपी,स्पीच थेरेपी, स्पेशल एज्युकेशन और फिजियोथेरेपी की काउंसलिंग के साथ उनका उपचार भी किया जाता है जिसका लाभ कई बच्चों को हो रहा हैं। आयोजन में स्पेशल बच्चों के लिए दिया डेकोरेशन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी जिसमें व्योम माली प्रथम,ओम शर्मा द्वितीय तथा आहना खालकर ने तृतीय स्थान हासिल किया।

केंद्रीय मंत्री, विधायक ने खरीदे दीपक, मूर्तियां, पूजन सामग्री

बैतल। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के वोकल फॉर लोकल मिशन को प्रोत्साहित करते हुए क्षेत्रीय सांसद व केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके एवं बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल, बैतूल नपाध्यक्ष श्रीमति पार्वतीबाई बारस्कर के साथ जनप्रतिनिधियों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने बुधवार सुबह कारगिल चौक बैतूल में पथ विक्रेताओं से दीपोत्सव पर्व के लिए स्थानीय कुम्भकारों, मूर्तिकारों और कलाकारों से दीपक, मूर्तिया सहित साजसज्जा एवं पूजन सामग्री की खरदारी की। इस दौरान केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं बैतूल विधायक नें दुकानदारों से चर्चा कर उनके हाल चाल जाने तथा व्यवसाय के संबंध में बातचीत भी की। केन्द्रीय मंत्री एवं बैतूल विधायक ने आम जन से अपील की कि दीपावली त्योहार के साथ हमेशा ही स्थानीय कलाकारों द्वारा निर्मित की गई वस्तुए ही खरीदें। जिससे हमारी पुरातन कला और संस्कृति हमेशा जीवंत रहेगी तथा स्थानीय कुम्भकारों मूर्तिकारों,शिल्पियों सहित अन्य कलाकारों की आर्थिक स्थित मजबूत होगी। इस अवसर पर केन्द्रीय राज्यमंत्री डी.डी.उइके बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल के साथ बैतूल नपा अध्यक्ष श्रीमति पार्वती बाई बारस्कर, नपाउपाध्यक्ष महेश राठौर, कोठी बाजार मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य, गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा सहित पार्षदों, भाजपा कार्यकर्ताओं और नागरिकों ने भी दीपावली के लिए स्थानीय कलाकारों से पूजन एवं साज सज्जा की सामग्री खरीदी।

12 नवंबर को जिले में स्थानीय अवकाश घोषित

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने आदेश जारी कर 12 नवंबर, 2024 मंगलवार देवउठनी एकादशी/तुलसी विवाह का स्थानीय अवकाश घोषित किया है। उल्लेखनीय हैं कि पूर्व आदेश अनुसार कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने 1 नवंबर गोवर्धन पूजा का स्थानीय अवकाश घोषित किया था। चूंकि मध्यप्रदेश शासन द्वारा गोवर्धन पूजा के उपलक्ष्य में 1 नवंबर को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। इसके चलते कलेक्टर ने 1 नवंबर को सार्वजनिक अवकाश होने के कारण अब उसके स्थान पर 12 नवंबर देवउठनी एकादशी को स्थानीय अवकाश घोषित किया है।

हर घर दिवाली अभियान के तहत जरूरतमंद परिवारों के साथ मनाई सार्थक दीपावली

बैतूल। राज्य आनंद संस्थान का हर घर दिवाली अभियान के अंतर्गत प्रत्याशा आनंद क्लब, ताप्ती दर्शन और अथर्व वेलफेयर सोसाइटी के सदस्यों द्वारा बुधवार 30 अक्टूबर को संजय कॉलोनी में जरूरतमंद परिवारों के बीच दिवाली मनाई। बुजुर्गों एवं बच्चे जिनके माता अथवा पिता नहीं है उन बच्चों को दिवाली की मिठाई, पटाखे एवं कपड़े वितरित किए गए। अथर्व वेलफेयर सोसाइटी की अध्यक्ष श्रीमती रुक्मणी सोनारे ने कहा कि सही मायने में दिवाली बुजुर्गों और बच्चों के साथ ही मनाई जानी चाहिए। उनसे आशीर्वाद और प्यार मिलता है। समाजसेवी प्रमिला धोत्रे द्वारा बच्चों को पटाखे, मिठाइयां, दिये एवं कपड़े

वितरित किए गए। उन्होंने कहा कि यह दिवाली मेरे लिए बहुत ही सार्थक दिवाली है कि मैं इन परिवारों को खुशियां दे पा रही हूं। प्रत्याशा आनंद क्लब की अध्यक्ष तूलिका पचौरी ने कहा कि एक सप्ताह से चलाया जा रहा यह अभियान सफल अभियान रहा है। इसके माध्यम से कई परिवारों को जरूरत का सामान हमारे द्वारा पहुंचाया गया है। तापी दर्शन की ओर से श्रीमती निमिषा संजय शुक्ला ने बताया कि हर घर दिवाली अभियान में बहुत सारे संगठनों ने अपनी भागीदारी दिखाई है। यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि संस्थाएं आगे आकर जरूरतमंदों की दिवाली में शामिल हो सकी। हम सभी का बहुत ही आभार व्यक्त करते हैं। प्रज्वल धोत्रे, यश धोत्रे द्वारा बच्चों को पटाखे और मिठाइयां वितरित की गई। सब्जी बेचने वाली महिलाओ को भी मिठाईया एवं श्री फल भेट किये गए। इस अवसर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती उषा सातनकर, गीता रावत एवं आंगनबाड़ी सहायिका शारदा वानखेडे, करुणा जैन उपस्थित थे।

न्यायिक व्यवस्था ने दिलाया बंदी को पिता के अंतिम संस्कार में शामिल होने का हक

बैतूल। दीपावली पर्व के बीच जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल ने न्याय सबके लिए के सिद्धांत को सार्थक करते हुए, बंदी रवि वाड़िवा पिता भिखारी वाड़िवा को अपने मृत पिता के अंतिम संस्कार में शामिल होने का अवसर प्रदान किया। बैतूल बाजार थाना अंतर्गत ग्राम मुजगांव निवासी रवि पिछले तीन वर्षों से पॉक्सो कानून के तहत जेल में निरुद्ध है। रवि वाड़िवा के मामले की सुनवाई अपर सत्र न्यायालय भैंसदेही के न्यायालय में प्रकरण क्रमांक 51/21 के तहत श्रीमान राकेश पाटीदार की अदालत में चल रही है। 29 अक्टूबर, मंगलवार को रात में रवि के पिता का निधन हो गया, जिसके बाद ग्रामवासियों ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकारियों से संपर्क कर अनुरोध किया कि उसे अंतिम संस्कार में शामिल होने का अवसर मिले। इस मामले में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव डॉ. कु. महजबीन खान ने तत्परता दिखाते हुए, चीफ डिफेंस काउंसल श्याम किशोर शुक्ला को निर्देशित किया। चूंकि मामला भैंसदेही न्यायालय में विचाराधीन था और दीपावली अवकाश के चलते न्यायालय बंद था, रिमांड कोर्ट में सुनवाई का विकल्प तलाशा गया। भैंसदेही रिमांड कोर्ट भी अचानक अवकाश पर था, जिससे सुनवाई का विकल्प बैतूल न्यायालय में था। रिमांड कोर्ट बैतूल द्वारा सुनवाई की गई वहां से आरोपी रवि को सुरक्षा प्रबंधों के साथ अपने पिता के अंतिम संस्कार में शामिल होने की अनुमति प्रदान की गई। इस कार्यवाही के बाद रवि ने अपने गांव में जाकर पिता का अंतिम दर्शन किया। इस प्रकरण में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सदस्य एवं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीमती संगीता भारती राठौर ने संवेदनशीलता दिखाते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे कि न्याय और मानवीय मूल्यों का आदर बरकरार रखा जा सके।

अवैध गांजा मादक पदार्थ परिवहन करते तीन गिरफ्तार

बैतूल। कोतवाली पुलिस ने अवैध गांजा मादक पदार्थ परिवहन करते तीन गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि 29-30 अक्टूबर की रात को कोतवाली पुलिस टीम को एक मुखबिर से सूचना मिली कि वाहन एमपी 48, सीए 2179 से नागपुर-भोपाल हाईवे पर गांजा लाया जा रहा है। पुलिस ने सोनाघाटी पारधीढाना हाईवे पर नाकाबंदी की। नागपुर की ओर से आ रही उक्त वाहन को रोक कर उसमें सवार संदेही व्यक्तियों से पूछताछ की गई। जिसमें संदेही ने अपना नाम अजय पवार उर्फ अज्जू डेको (पिता शंकर पवार), उम्र 33 वर्ष, निवासी संजय कालोनी, थाना गंज, बैतूल, परमेश्वर उर्फ गजनी धुर्वे (पिता रामराव धुर्वे), उम्र 29 वर्ष, निवासी संजय कालोनी, थाना गंज, बैतूल और दीपक मोरवंशी (पिता राजबीर उर्फ बबलू मोरवंशी), उम्र 26 वर्ष, निवासी भग्गूढाना, थाना गंज, बैतूल होना बताया। उक्त युवकों के पास से अवैध मादक पदार्थ गांजा - 3 किलो 212 ग्राम, अनुमानित कीमत लगभग 30,000 रुपये और मारुति सुजुकी अल्टो वाहन अनुमानित कीमत 3,32,000 रुपये जब्त किया। उक्त कार्रवाही में थाना कोतवाली के थाना प्रभारी निरीक्षक देवकरण डेहरिया, उनि नरेन्द्र उईके, उनि वहीद खान, प्रधान आरक्षक शुभम चौबे, आरक्षक नितिन चौहान, आर. अनिल बेलवंशी और आर. शिवकुमार की सराहनीय भूमिका रही।

सागौन की तस्करी करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर जिले में अवैध कटाई में संलिप्त वन माफियाओं को पकडऩे की मुहिम चलाई जा रही है। वनमंडलाधिकारी उत्तर बैतूल (सा.) वनमंडल श्री नवीन गर्ग के निर्देशन में उपवन मंडलाधिकारी बैतूल (सा.) श्री श्रेयश श्रीवास्तव, परिक्षेत्र अधिकारी बैतूल (सा.) श्री के. एस. बघेल एवं परिक्षेत्र अधिकारी सारनी (सा.) श्री शरदेन्दु नायक द्वारा अलग-अलग दल गठित कर विभिन्न स्थलों पर छापामार कार्यवाही कर तीन आरोपियों को 27 अक्टूबर 2024 को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया। आरोपियों के बयान एवं विवेचना में प्राप्त साक्ष्यों पर अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। प्रकरण में कार्यवाही प्रचलित है।

पटाखा बाजार कृषि उपज मंडी परिसर में लगाया गया

सुबह सवेरे सोहागपुर

प्रदेश सरकार के निर्देश पर इस साल पटाखा बाजार सुरक्षित स्थान पिपरिया रोड क उप कृषि मंडी प्रांगण में लगाया गया है। उल्लेखनीय है कि पूर्व पटाखा बाजार पलकमती नदी के व्यस्ततम जगह रामलीला मैदान में लगाया जाता था। हालांकि नागरिकों को फटाका खरीदी के लिए थोड़ी दूरी महसूस होगी। लेकिन स्थानीय प्रशासन ने नागरिकों को किसी भी अनजानी दुर्घटना से बचाव की अच्छी पहल की है। इसी संदर्भ में मंगलवार रात्रि में अनुविभागीय अधिकारी असवनराम चिरामन एवं एसडीओ पुलिस संजू चौहान ने फटाका विक्रय स्थल का निरीक्षण किया। इस मौके पर अग्निशमन स्टाफ उपस्थित मिला। अधिकारी द्वय ने एम्बुलेंस की त्वरित क्षमताओं का मॉक ड्रिल कराया । इसके अलावा समस्त दुकानदारों को सुरक्षा के दिशा निर्देश दिए ।

दीपावली पर विशेष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

विदेशों में भी लोकप्रिय है दीपोत्सव

दीपावली, जो 'प्रकाश का पर्व' कहलाता है, भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक प्रमुख उत्सव है। यह पर्व न केवल भारत में बल्कि विश्व के उन तमाम हिस्सों में भी उल्लास के साथ मनाया जाता है, जहां भारतीय प्रवासी बसे हैं। दीपावली का अर्थ केवल मिट्टी के दीपक जलाना नहीं है। यह अच्छाई पर बुराई की विजय, अज्ञानता पर ज्ञान की और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। विदेशों में बसे भारतीय समुदायों ने इस पर्व को संजोकर रखा है और इसे अपनी नई पीढ़ियों में संचारित किया है।

अमेरिका में दीपावली का उत्सव

संयुक्त राज्य अमेरिका में दीपावली अब केवल भारतीय प्रवासियों तक ही सीमित नहीं रही है। बढ़ते भारतीय समुदाय के कारण दीपावली ने अमेरिका की बहुसांस्कृतिक धरोहर में भी स्थान पाया है। यहाँ यह पर्व सामाजिक मेल-जोल का माध्यम बन गया है। भारतीय समुदाय दीपावली के अवसर पर मंदिरों में पूजा-अर्चना करता है और सामूहिक भजन-कीर्तन का आयोजन होता है। बड़े शहरों जैसे न्यूयॉर्क, सैन फ्रांसिस्को, और शिकागो में विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम और दीपावली मेलों का आयोजन होता है, जिसमें भारतीय संगीत, नृत्य, कला और व्यंजनों का प्रदर्शन किया जाता है। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति को वहां के समाज में स्थापित किया जा रहा है, और दीपावली अमेरिकी समाज में पारस्परिकता और बहुसंस्कृतिवाद को बढ़ावा दे रही है।

कनाडा में दीपावली: एक सांस्कृतिक मिलन

कनाडा में भी भारतीय समुदाय दीपावली का भव्य आयोजन करता है। यहां भारतीयों का एक बड़ा प्रवासी समूह है, जो इस पर्व को अपने सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संजोए हुए है। टोरंटो और वैंकूवर में बड़े स्तर पर दीपावली के कार्यक्रम होते हैं, जहाँ कनाडाई नागरिकों को भी आमंत्रित किया जाता है। मंदिरों में पूजा के साथ-साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। कनाडा की सरकार और स्थानीय नगरपालिकाएं भी भारतीयों के इस पर्व को मान्यता देते हुए इसमें सम्मिलित होती हैं। इस प्रकार, दीपावली ने कनाडाई समाज में भारतीय संस्कृति की पहचान को मजबूती प्रदान की है और बहुसांस्कृतिक स्वीकार्यता को भी बढ़ावा दिया है।

ब्रिटेन में दीपावली: परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

ब्रिटेन में भारतीयों की एक बड़ी आबादी है और यहाँ दीपावली का विशेष महत्त्व है। ब्रिटिश समाज ने इस पर्व को अपनाते हुए इसे अपनी सांस्कृतिक धरोहर में सम्मिलित कर लिया है। लंदन के प्रसिद्ध ट्राफलगर स्क्वायर में दीपावली का भव्य आयोजन होता है। यहां भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, नृत्य, संगीत, और कला का आयोजन किया जाता है। ब्रिटेन की संसद में भी दीपावली मनाई जाती है, जहां भारतीय सांसद और अन्य अधिकारी मिलकर इस पर्व का सम्मान करते हैं। यह उत्सव ब्रिटिश समाज में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ का प्रतीक है और सांस्कृतिक एकता को प्रबल बनाता है।

सिंगापुर में दीपावली: विविधता में एकता का उत्सव

सिंगापुर एक बहुसांस्कृतिक समाज है, जहाँ भारतीय, मलेशियाई, चीनी, और अन्य विभिन्न समुदाय मिलजुल कर रहते हैं। दीपावली यहां एक राष्ट्रीय पर्व के समान ही मनाई जाती है। खासकर लिटिल इंडिया नामक क्षेत्र में दीपावली के समय भव्य सजावट होती है और विभिन्न प्रकार के उत्सवों

का आयोजन होता है। रंग-बिरंगे प्रकाशों से सजी सड़कों पर भारतीय व्यंजन, संगीत, नृत्य और खरीदारी का आयोजन होता है। सिंगापुर सरकार भी इस पर्व को बढ़ावा देती है और इसके द्वारा देश में विविधता के बीच सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देती है।

मलेशिया में दीपावली: बहुजातीय संस्कृति का प्रतीक

मलेशिया में दीपावली को 'हरी दीपावली' के नाम से जाना जाता है। यहां हिंदू-मलेशियाई समुदाय इसे बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाता है। मलेशियाई समाज में दीपावली सामाजिक मेलजोल और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है।

भारतीय समुदाय मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन करता है, और घरों में दीप जलाकर वातावरण को पवित्र बनाया जाता है। यहां दीपावली के दौरान सार्वजनिक अवकाश भी होता है, जिससे अन्य जातीय समूह भी इसमें सम्मिलित होकर भारतीय संस्कृति का अनुभव कर पाते हैं। यह पर्व मलेशिया की बहुजातीय समाज को जोड़ने और सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाने का साधन बन गया है।

दक्षिण अफ्रीका में दीपावली: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और सांस्कृतिक उत्सव

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय का इतिहास गहरा और पुराना है। महात्मा गांधी के समय से यहां भारतीय समुदाय बसा हुआ है, और दीपावली उनके लिए सांस्कृतिक धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण है। यहां का भारतीय समुदाय दीपावली के दिन अपने घरों और मंदिरों में दीप जलाता है और सामूहिक पूजा का आयोजन करता है। दक्षिण अफ्रीका के कई शहरों में भारतीय व्यंजनों, संगीत, और नृत्य का आयोजन होता है। इस पर्व के माध्यम से भारतीय समुदाय ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों को संजो कर रखा है और यह स्थानीय समाज में भारतीय पहचान को और सुदृढ़ करता है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में दीपावली: प्रवासियों का गौरव

ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में भी भारतीय प्रवासी समुदाय दीपावली का आयोजन करते हैं। मेलबोर्न, सिडनी, ऑकलैंड आदि शहरों में दीपावली के बड़े मेलों का आयोजन किया जाता है। इन मेलों में भारतीय व्यंजन, हस्तशिल्प, नृत्य, और संगीत की प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं, जिससे भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता है। स्थानीय नागरिक भी इस पर्व में सम्मिलित होते हैं और भारतीय संस्कृति से परिचित होते हैं। यह उत्सव यहां के बहुसांस्कृतिक समाज में भारतीय मूल्यों को स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध होता है।

संयुक्त अरब अमीरात में दीपावली: एक अलौकिक अनुभव

संयुक्त अरब अमीरात, विशेषकर दुबई और अबू धाबी में, दीपावली का पर्व अत्यंत भव्य रूप में मनाया जाता है। यहां भारतीय प्रवासियों की बड़ी संख्या है, जो इस पर्व को पूरे जोश-खरोश से मनाती है। दुबई के मशहूर बुर्ज खलीफा जैसी इमारतें दीपावली के अवसर पर विशेष लाइटिंग और आतिशबाजी से सजी होती हैं। भारतीय समुदाय अपने घरों में पूजा करता है और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस प्रकार दीपावली ने दुबई में भारतीय संस्कृति की झलक को स्थापित किया है और इस्लामी समाज में भी भारतीय मूल्यों को सम्मान दिलाने में मदद की है।

दीपावली का उत्सव विदेशों में केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक मिलन का साधन बन गया है। भारतीय प्रवासी समुदाय अपने पर्वों को नए समाज में उत्साहपूर्वक मनाते हैं और इसके माध्यम से वे न केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखते हैं, बल्कि वैश्विक समाज में भारतीयता का प्रसार भी करते हैं। दीपावली के माध्यम से भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता और मान्यता में वृद्धि होती है और इसे हर देश के सामाजिक ताने-बाने में एक अद्वितीय स्थान प्राप्त होता है।

म.प्र. स्थापना दिवस

डॉ. मोहन यादव

लेखक म.प्र. के मुख्यमंत्री हैं

विकसित मध्यप्रदेश और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संकल्प की ओर बढ़ते कदम

मध्यप्रदेश के नये स्वरूप की यात्रा को 68 वर्ष बीत चुके हैं। इस यात्रा में लगभग दो दशक पूर्व तक प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी में था। विकास के निरंतर प्रयास से प्रदेश प्रगति पथ पर आगे बढ़ा। विगत दस वर्षों से यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में प्रदेश ने विकास की करवट ली और प्रदेश विकसित राज्य की ओर अग्रसर है। अब हमने जनसेवा, सुशासन और प्रदेश के चहुंमुखी विकास की नयी यात्रा आरंभ की है। प्रदेशवासियों के साथ मिलकर प्रदेश को देश में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में कार्य किये जा रहे हैं।

भारत का हृदय, अपना मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। पुण्य सलिला माँ नर्मदा का सान्निध्य और भगवान महाकालेश्वर का आशीर्वाद हमें प्राप्त है। यह असंख्य वीरों, बलिदानियों और राष्ट्र संस्कृति के प्रति समर्पित महान विभूतियों की धरती है। यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य की तपोस्थली है। यहां गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती ने स्वत्व के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया था। राष्ट्र में अपने सांस्कृतिक गौरव को पुर्नस्थापित करने वाली पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की कर्मस्थली है। उनके त्रिशताब्दी समारोह के आयोजन वर्ष में कई कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि मध्यप्रदेश को प्राकृतिक संपदा के आधार के साथ इतिहास का गौरव प्राप्त है। अब हम विकास के साथ विरासत को लेकर आगे बढ़ेंगे।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए विकसित भारत निर्माण का संकल्प दिया है। इस संकल्प की सिद्धि के लिये उन्होंने ज्ञान (GYAN), गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान का नया सूत्र (वाक्य) दिया। ये चार वर्ग विकास के आधार स्तम्भ हैं। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में प्रदेश विकास और कल्याण के लिये युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन के तहत कार्य करने जा रहे हैं।

युवा शक्ति मिशन शिक्षा, कौशल विकास, रोज़गार, उद्यमिता, नेतृत्व विकास, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्य की योजना बनाकर मिशन मोड में कार्य करेगा। युवाओं को स्वरोज़गार से जोड़ने के साथ हमने शासकीय नौकरियों में एक लाख से अधिक युवाओं के भर्ती का अभियान शुरू कर दिया है। मध्यप्रदेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने वाला देश का पहला राज्य है। प्रदेश के 55 जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का शुभारंभ, कुलपतियों को कुलगुरु का मान, शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण और योग ध्यान पाठ्यक्रम का समावेश किया गया है। युवा शक्ति मिशन में युवाओं के विकास और निर्माण के सभी कार्य संभव होंगे।

गरीब कल्याण मिशन स्वरोज़गार तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधा आदि की दिशा में कार्य करेगा। नारी शक्ति मिशन के तहत बालिका शिक्षा, लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना, लखपति दीदी योजना, महिला स्व-सहायता समूहों के सशक्तिकरण आदि कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ किये जायेंगे। किसान कल्याण मिशन में कृषि और उद्यानिकी को लाभ का व्यवसाय बनाने की दिशा में कार्य होंगे। किसानों को राहत प्रदान करने के साथ कृषि की उपज बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास किये जायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प को पूरा करने में इन चारों मिशन की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

हमारा प्रयत्न है कि मध्यप्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र के विशिष्ट उत्पादों के अनुरूप उद्योग स्थापित हों। इसके लिए हमने रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, सागर और रीवा में आयोजन किया। हैदराबाद, कोयंबटूर तथा मुंबई में रोड शो और उद्योगपतियों को निवेश के लिये प्रदेश में

आमंत्रित करना उद्योग विस्तार का उपक्रम है। इससे विपुल क्षेत्रीय स्थानीय उत्पाद के अनुसार उद्योग स्थापना का क्रम आरंभ होगा और औद्योगिक विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन आयेगा। मेरा संकल्प है कि प्रदेश की धरती पर कभी जल का संकट न आए इसका एक-एक कोना जल से सिंचित हो। इसके लिए हमने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में केन-बेतवा और पार्वती-काली-सिंध चंबल नदी लिंक परियोजना ओंपर तेजी से कार्य आरंभ कर दिया है। इस अभियान में सदानीरा नदियों के जल को मौसमी नदियों के साथ जोड़ने से हमारे अन्नदाता किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मिलेगा, पेयजल की समस्या समाप्त होगी और धरती का जल स्तर बढ़ेगा। कृषि के साथ गौ-पालन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक गांव में गौ-शाला खोली जायेगी। गाय हमारी संस्कृति और कृषि का आधार है। प्रदेश में हम गौ-संरक्षण एवं संवर्धन वर्ष मना रहे हैं।

प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में सुशासन के लिए होने वाले प्रयास में साइबर तहसील परियोजना को सभी 55 जिलों में लागू किया गया है। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है। थानों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण, राजस्व महाअभियान के 2 चरणों में नामांतरण, बंटवारा, अभिलेख दुरुस्ती, नक्शा सुधार और सीमांकन के 80 लाख से अधिक लंबित प्रकरणों का निराकरण, आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन व्यवस्था लागू की है। गरीब कल्याण हमारी प्राथमिकता है। कार्य के आरंभ में ही हमने इंदौर की हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 मजदूरों को उनका अधिकार दिलाया और गंभीर बीमारी के गरीब मरीजों के लिये पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा शुरू की। बेटियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिये सेनिटेशन एवं हाइजीन योजना में 19 लाख किशोरियों के खातों में 57 करोड़ रूपये से अधिक राशि प्रदान की गई। इस कार्य को यूनिसेफ इंडिया द्वारा भी सराहना मिली है।

मध्यप्रदेश गौरवशाली विरासत और संस्कृति से समृद्ध है। इसे सहेजने तथा आध्यात्मिक अभ्युदय की दिशा में श्रीराम वन गमन पथ, श्रीकृष्ण पाथेय का निर्माण, पीएमश्री पर्यटन वायुसेवा, वीर भारत न्यास का शिलान्यास, विक्रमोत्सव के आयोजन में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का शुभारंभ, शासकीय कैलेंडर में विक्रम संवत् अंकित करना। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के क्रम में रक्षाबंधन, श्रावण उत्सव तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया गया। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में विकास की जो गंगा प्रवाहित हो रही है, उससे प्रदेश तीव्र गति से विकास की ओर अग्रसर है। केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं, पीएम स्व-निधि योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पीएम आवास योजना, कृषि अवसंरचना निधि, प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना, पीएम स्वामित्व योजना, नशामुक्त भारत अभियान, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन, स्वच्छ भारत मिशन आदि के क्रियान्वयन और पात्र हितग्राहियों को उनका लाभ दिलाने में मध्यप्रदेश,देश में अग्रणी है।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि यह आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक अभ्युदय का समय है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में, नीतियों और निर्णयों को अमल में लाने के लिए मुझे प्रदेशवासियों की संकल्प शक्ति चाहिए। मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप स्थानीय उत्पादों का उपयोग करें, स्थानीय विशेषताओं के अनुरूप विकास यात्रा में सहभागी बनें और वोकल फॉर लोकल को अपनाएं। प्रदेश के युवा, महिलाएं, अन्नदाता और गरीब वर्ग समान रूप से प्रगति करें, सबका जीवन खुशहाल हो, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी अधोसंरचना के क्षेत्र में प्रदेश विकसित और मजबूत बने, इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए हम पूर्ण समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मध्यप्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता के साथ, सहयोग और संकल्प से हम आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाएंगे और विकसित भारत के निर्माण में सहभागी होंगे।

प्रदेशवासियों को मध्यप्रदेश के 69वें स्थापना दिवस की मंगलकामनाएं...

दीपोत्सव विशेष

सुसंस्कृति परिहार

एक दीप जले मोहब्बत का

भाईचारा को दरकिनार करने वालों के दिलों में रोशनी की एक किरण पहुंचे यह दीप पर्व पर हमें संकल्प लेना चाहिए। देश में आज जिस तरह आदिवासियों, दलित, पिछड़ों और तमाम अल्पसंख्यकों के बीच कटुता पनपाई गई है उनसे भारतीय सनातन धर्म और संस्कृति को गहरा धक्का लगा है। यह कभी ज़रूरी नहीं था कि सिर्फ हिन्दू ही दीपोत्सव मनाएं यह तो सम्पूर्ण भारतवासियों के लिए खुशी का पर्व होता रहा है। क्या मुसलमान, ईसाई, जैन, बोद्ध, आदिवासी और समाज का कामगार वर्ग इसमें बड़ी तादाद में शरीक होते रहे हैं। यह राम की अयोध्या वापसी का सबब तो था ही किंतु संपूर्ण देश में इसकी पहुंच की वजह ख़रीफ़ फसलों के आगमन से जुड़ा था। किसान उससे जुड़े कामगार तथा ख़रीद बढ़ने के आरजूमंद व्यापारी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा थे। शादी ब्याह की बाट जोहते पंडित जी तथा सस्ते अनाज की चाहत वाला कर्मचारी वर्ग भी इस खुशी में शामिल होता था। घर घर लक्ष्मी पूजा का विधान भी इसलिए विकसित हुआ क्योंकि इस खुशी के पीछे कहीं ना कहीं धन की आमद जुड़ी थी।

किंतु इसे बदरंग कर दिया कारपोरेट जगत ने उसने हर व्यक्ति की स्वतंत्र आय पर डाका डालना शुरू कर दिया। उसकी हर क्षेत्र में घुसपैठ ने लोगों की खुशी छीन ली।अब हर माल का रेट कारपोरेट तय करने लगा जिससे तमाम लक्ष्मी इन पूंजीपतियों के घर बंधक बन गई। सारी खुशियां इस वर्ग ने हड़प लीं और सार्वजनिक क्षेत्र लगभग मृत प्राय हो गया। किसान, कामगार और तमाम लोगों का जुड़ाव खत्म किया गया। जिससे ना केवल मंहगाई बढ़ी बल्कि रोजगार भी जाते रहे। जिससे देश में चारों ओर गहन अंधेरा फैल गया है। देश की सारी अमानत चंद अमीरों के पास सिमट गई है 80 करोड़ लोग आज भी पांच किलो राशन में लगे हुए हैं। मेहनत कश भारत के लोगों का ये हाल देखकर किसको खुशी मिल सकती है।

इस ग़म के साथ तमाम देशवासियों के बीच भाईचारा बिगाड़ कर सनातन संस्कृति की वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा को लुप्त प्राय कर दिया गया है। सोचिए जिस देश में तमाम वसुधा को कुटुम्ब माना गया हो वहां इंसान ही इंसान के खून का प्यासा हो जाए उसे उसकी जन्मभूमि से हटाने की कोशिश हो। बच्चों

स्त्रियों पर रहम की जगह बलात्कारियों और अपराधियों का स्वागत सत्कार हो। उस देश से इस पावन पर्व पर भाईचारा कायम रखने की ज़िद यदि हमारे भीतर नहीं जन्मती है तो हमें अपने आपको भारतीय कहना अनुचित है।

इस बिगड़े माहौल में एक सिरफिरा राहुल गांधी, महात्मा गांधी के शांति और अहिंसा के पथ पर चलकर पूरे भारतवर्ष में भारत जोड़ो यात्रा पर दो चरणों में निकलता है। उसे आम जनता का अपार स्नेह मिलता है यह तो इस बात को सिद्ध करता है कि देशवासियों में अपनी गंगा-जमुना संस्कृति का रंग कितना गहरा है। इसी को अल्लामा इक़बाल ने बहुत पहले भांप लिया था और कहा था कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। यकीनन कितने भी कठिन दौर आए और निकल गए। हमारी संस्कृति अमिट रही यकीन रखिए ये अंधेरा भी छटेगा। हम सब के एका प्रयासों से।

इसके लिए,बार बार हमें यह भी सोचना होगा कि देश को हिंदु राष्ट्र नहीं बनाना है। हम सब सनातन संस्कृति और धर्म के पोषक हैं। रंग-बिरंगी संस्कृति और विविध उत्सव हमारी शान और पहचान हैं। हमें अपने देश में रहने वाले हर व्यक्ति का सम्मान करना होगा। आदिकाल से हमने ना जाने कितने धर्मावलंबियों को शरण दी है जिससे हमारे रंगों और उत्सवों में वृद्धि हुई है। इस बड़प्पन को बनाए रखने हम पुरातन की तरह हर पर्व को खुशहाली से मनाएं। हमारे समाज में आई विकृतियों को दूर करें ।धन का सही वितरण हो। हर कौम को अपनी मेहनत का हिस्सा मिले। वह राशन की लाईन में ना लगे। ऐसे प्रयासों में लगना होगा। बंधक लक्ष्मी को आज़ाद कराना होगा। हज़ारों दीप जलाने से बेहतर हैं हम सर्वे भवन्तु सुखिना की भावना का परिचय देते हुए इस नफ़रत के माहौल को बदलने घर घर में मोहब्बत का एक दीप जलाएं। यकीन मानिए यह देश की समृद्धि और विकास के लिए हमारा सबसे बड़ा अवदान होगा।

पुण्यतिथि

चित्रा माली

लेखक सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

भारतीय राजनीति की पावर वीमेन इंदिरा गांधी

भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और भारतीय राजनीति की पावर वीमेन जिन्हें आयरन लेडी की उपाधि से भी नवाजा गया है। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1971 में भारतीय राजनीति में स्थापित पितृसत्तात्मक चरित्र को में बदल दिया था। नवंबर 1969 में दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक थॉट ने एक कांग्रेस पार्टी पर टिप्पणी की कि ऐसा लगता है कि कांग्रेस ने खुद में ये भरोसा खो दिया है कि वो देश को एकजुट रखने वाली ताकत है। एक जमाने की सबसे शक्तिशाली पार्टी अब आपस में ही संघर्ष कर रहे गुटों में बंट गई है। जब देश में 1971 में आम चुनाव की घोषणा की गई तो 'थॉट' ने लिखा कि इस चुनाव में कांग्रेसी ही कांग्रेसी से लड़ेंगे। कांग्रेस के इस सत्ता संघर्ष से स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय और जातिवादी समूहों को फायदा होगा। 'थॉट' ने आगे लिखा कि नतीजतन श्रीमती इंदिरा गांधी की पार्टी को संसद में एक तिहाई सीट भी मिलनी भी मुश्किल हो जाएगी। दूसरे समूह का भविष्य इससे भी खराब दिखता है। सरकार का कार्यकाल अभी भी 14 महीने बचा हुआ था जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने चुनाव करवाने का फैसला लिया था। श्रीमती इंदिरा गांधी 1971 के आम चुनाव में जिस राजनैतिक स्थिति का सामना कर रही थी। वह बहुत कुछ भारत के पहले आम चुनाव 1952 की ही तरह थी जिसका सामना जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे। नेहरू की तरह ही श्रीमती इंदिरा गांधी अपनी पार्टी से लड़ाई लड़कर चुनावों में उतरी थी। नेहरू की तरह ही उन्होंने भी जनता से एक प्रगतिशील सरकार के लिए जनमत मांगा था। पंडित नेहरू की तरह ही वे अपनी पार्टी की मुख्य प्रचारकर्ता और प्रवक्ता भी थी। वह खुद एक प्रतीक बनकर जनता के बीच जा रही थीं। अपनी पार्टी को चुनाव जीतने के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी ने दिन-रात मेहनत की। दिसंबर,1970 के अंतिम सप्ताह में जब लोकसभा भंग की गई तब से लेकर 10 सप्ताह बाद होने वाले चुनाव तक उन्होंने 36,000 मील की यात्रा की। उन्होंने 300 चुनावी सभाओं को संबोधित किया और लगभग 2 करोड़ लोगों ने उनका भाषण सुना। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने एक अमेरिकन दोस्त को खुद ही इन आंकड़ों के बारे में विस्तार से लिखे हुए पत्र में बताया था। उन्होंने कहा कि 'लोगों की आंखों में चमक देखना उनके लिए वाकई अद्भुत अनुभव है'। देशव्यापी चुनावी दौरों ने उन्हें वर्ष 1967 की तुलना में अधिक लोकप्रिय बना दिया। पूरे देश के लोग अब उन्हें जानने और मानने लगे थे। जनता से वोट मांगते वक्त उन्होंने अपने आकर्षक व्यक्तित्व, अपने पिता की ऐतिहासिक भूमिका और सबसे ज्यादा 'गरीबी हटाओ' जैसे नारे का खुलकर इस्तेमाल किया। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1971 के चुनावी घोषणा पत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया था कि वे जनता के पूर्ण समर्थन से प्रगतिशील सुधारों को लागू करना चाहती है जिससे प्रतिक्रियावादी ताकतों को रोका जा सके और जनता से उन्होंने आर्थिक-सामाजिक विकास की एक क्रांतिकारी योजना देने का वादा भी किया। उन्होंने जनता से कहा कि वे छोटे किसानों और भूमिहीन मजदूरों के हित में काम करेगी साथ ही बड़े पूंजीपतियों से छोटे व्यापारियों के हितों की हिफाजत करेगी। उन्होंने निचली जाति और अल्पसंख्यकों के कल्याण का वादा भी किया। कांग्रेस (आर) ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में एक मजबूत और स्थायी सरकार देने का वादा किया और जनता से दक्षिणपंथी शैतानी और बुरी ताकतों से लड़ने के लिए समर्थन मांगा। पार्टी की राय में ये ताकतें देश के लोकतांत्रिक और समाजवादी उद्देश्य को नष्ट करने पर आमादा थी। विपक्ष ने इस चुनाव के लिए एक महागठबंधन बनाया जिसके पैरोकार नब्बे साल से ऊपर के हो चुके सी. राजगोपालाचारी थे। इस महागठबंधन में जनसंघ,कई स्वतंत्र पार्टी,कांग्रेस(ओ),समाजवादी और क्षेत्रीय पार्टियां शामिल थी। इस महागठबंधन के उद्देश्य था कि चुनाव में बहुकोणीय लड़ाई को रोका जाए। किसी कॉपीराइट ने तमाम मुद्दों को समेटते हुए 'इंदिरा हटाओ' का नारा गढ़ दिया। इसके जबाब में प्रधानमंत्री ने हास्य के अंदाज में कहा कि वे कहते हैं इंदिरा हटाओ,हम कहते हैं कि 'गरीबी

हटाओ'। यह नारा प्रधानमंत्री ने स्वयं गढ़ा या उनके किसी निजी सहयोगी ने इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है लेकिन जनता के बीच यह नारा चल निकला और इसकी वजह से कांग्रेस को नैतिकता का उच्च धरातल मिल गया। पार्टी ने खुद को प्रगतिशील बताया जबकि विपक्ष को प्रतिक्रियावादी ताकतों का गठजोड़ बताया। मतदान के दिन,मतदान केंद्रों पर उमड़ी भारी भीड़ ने साफ कर दिया कि लोग तकलीफों से छुटकारा पाने के लिए नई उम्मीद से लबरेज हैं। भूमिहीन मजदूरों, निचली जाति के लोगों और अल्पसंख्यकों ने कांग्रेस (आर) पार्टी को भारी समर्थन दिया। विपक्ष ने चुनाव को व्यक्ति केंद्रित बना दिया था जिसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ा। 1952 के चुनावों के बारे में यह कहा गया था कि अगर कांग्रेस एक लैंपपोस्ट को भी टिकिट दे दे तो वह भी चुनाव जीत जाएगा। लेकिन जब 1971 के चुनावी नतीजे सामने आए तो यह स्पष्ट हो गया कि श्रीमती इंदिरा गांधी की जीत उनके पिता नेहरू से भी ज्यादा बड़ी है। 518 सीटों में से कांग्रेस (आर) को 352 सीटों पर जीत हासिल हुई जबकि दूसरे नंबर पर आने वाली सीपीएम को महज 25 सीटें ही मिल पाई। विजेता और पराजित होने वाले दोनों ने ही स्वीकार किया कि यह एक ही व्यक्ति की जीत है। लेखक खुशवंत सिंह ने इस जीत पर टिप्पणी की कि इंदिरा गांधी ने सफलता पूर्वक अपने आपको एकमात्र राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में स्थापित कर लिया है। इसी के साथ उन्होंने चेतावनी देते हुए लिखा कि अगर जनता के एक बड़े वर्ग द्वारा स्वेच्छा से किसी एक व्यक्ति को असीमित सत्ता सौंपी दी जाती है और विपक्ष महत्वहीन हो जाता है तो फिर सत्ता में आने वालों के लिए अपनी उचित आलोचना को बर्दाश्त करना मुश्किल हो सकता है। इंदिरा गांधी को असीमित सत्ता देने के खतरे हमेशा मौजूद रहेंगे। चुनाव नतीजों के बाद 1971 में कांग्रेस (आर) का नाम बदलकर कांग्रेस (आई) कर दिया गया। लेकिन बाद में कांग्रेस से (आई) को भी हटा दिया गया था। जीत के इस अंतर ने वास्तविक कांग्रेस के सभी भ्रमों को साफ कर दिया था और यह स्पष्ट हो गया था कि इंदिरा गांधी की कांग्रेस ही वास्तविक कांग्रेस है और इसे किसी भी उपनाम की आवश्यकता नहीं है। भारत के पहले प्रधानमंत्री की तरह ही श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने आलोचकों को साथ रखा और अपनी आलोचना को बर्दाश्त भी किया इसके कई उदाहरण मौजूद है। उनमें से एक कमलेश्वर जी को दूरदर्शन की कमान सौपना भी था। कमलेश्वर जी ने आपातकाल के दौरान जो प्रतिरोध किया था उसके बावजूद भी उन्हें चुना जाना इसका प्रमाण था। खुद कलमेश्वर जी भी इस निर्णय से अचंभित थे और उन्होंने एक कार्यक्रम के दौरान जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती इंदिरा गांधी थी वहां मंच पर जाकर अपने को परिचित करवाया। श्रीमती इंदिरा गांधी उनसे बड़ी ही आत्मीयता से मिली और उनसे दूरदर्शन को स्वतंत्र रूप से संचालित और विकसित करने के लिए भी कहा। ऐसे कई और भी उदाहरण है। 1967 में डॉ. राममनोहर लोहिया ने उन्हें गूंगी गुड़िया कहा था लेकिन 1971 में इंदिरा गांधी ने भारतीय राजनीति को नया आयाम दिया। भारतीय समाज में नारीवादी आंदोलनों की शुरुआत भी इसी अवधि में हुई है जो कहीं न कहीं पहली भारतीय महिला प्रधानमंत्री से सबलता भी प्राप्त करते हैं। श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारतीय राजनीति में आधी आबादी का प्रतिनिधित्व बहुत ही बखूबी से किया जिससे अन्य महिलाओं को भी प्रेरणा मिली। 1971 में भारत पाकिस्तान युद्ध में भारत की विजय के बाद स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उन्हें दुर्गा का अवतार कहा था। श्रीमती इंदिरा गांधी नफरती हिंसा का शिकार हुई जिसके खिलाफ वे लगातार काम कर रही थी। पुण्यतिथि पर उन्हें शत शत नमन।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

६९ वें मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के राज्योत्सव एवं दीपोत्सव की मंगलकामनाएं

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र को अपनाते हुए राज्य सरकार ने स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने का संकल्प लिया है, जिससे पारंपरिक कलाओं और स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहन मिले और सभी की दीपावली रोशन हो सके।
मध्यप्रदेश सरकार के निर्णय के तहत धनतेरस से देव उठनी ग्यारस तक छोटे विक्रेताओं को टैक्स से मुक्त रखा गया है।"

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

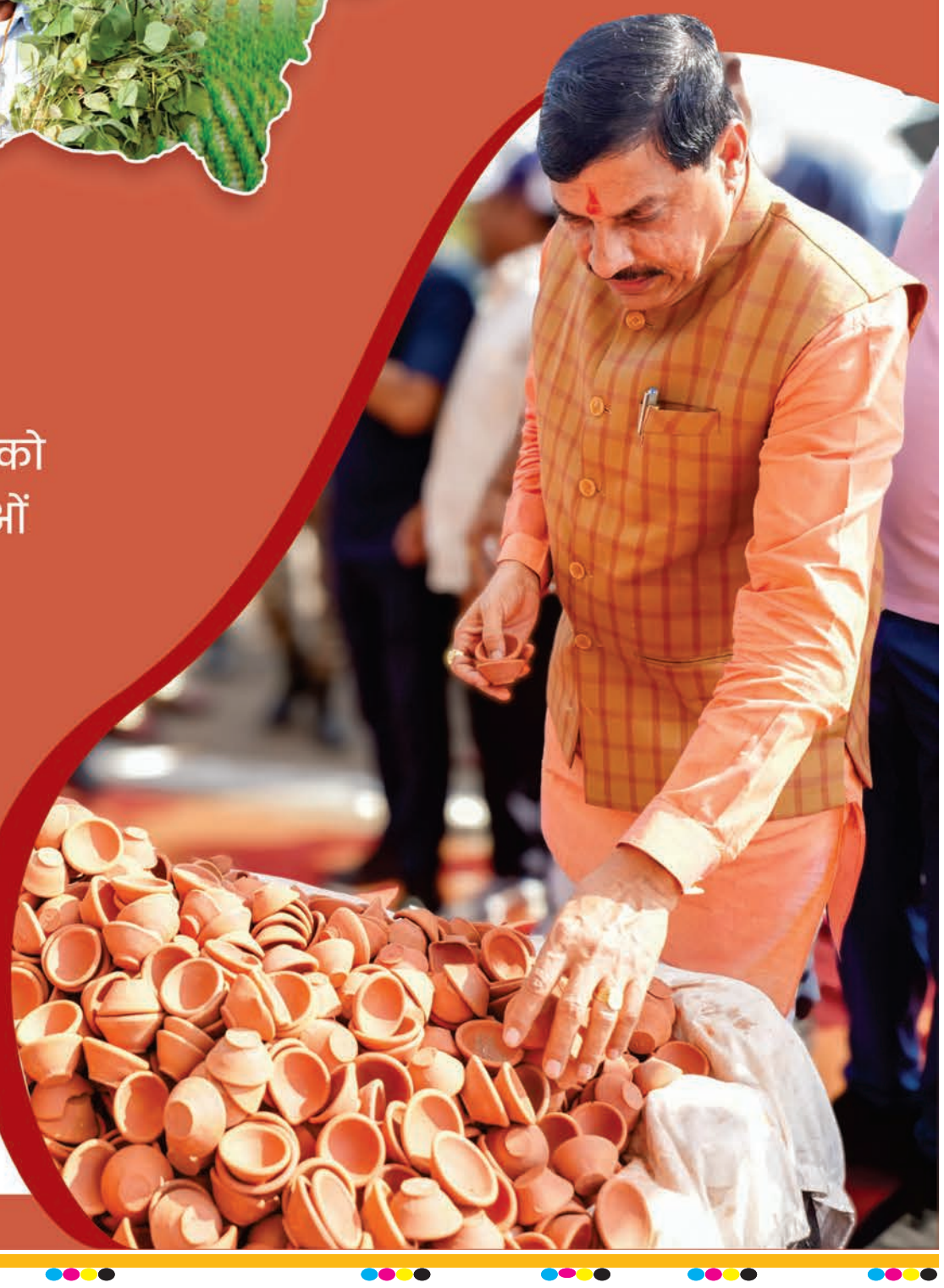

#मध्यप्रदेश_स्थापना_दिवस

@Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh @jansamparkMP
JansamparkMP

अकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी D11095/24